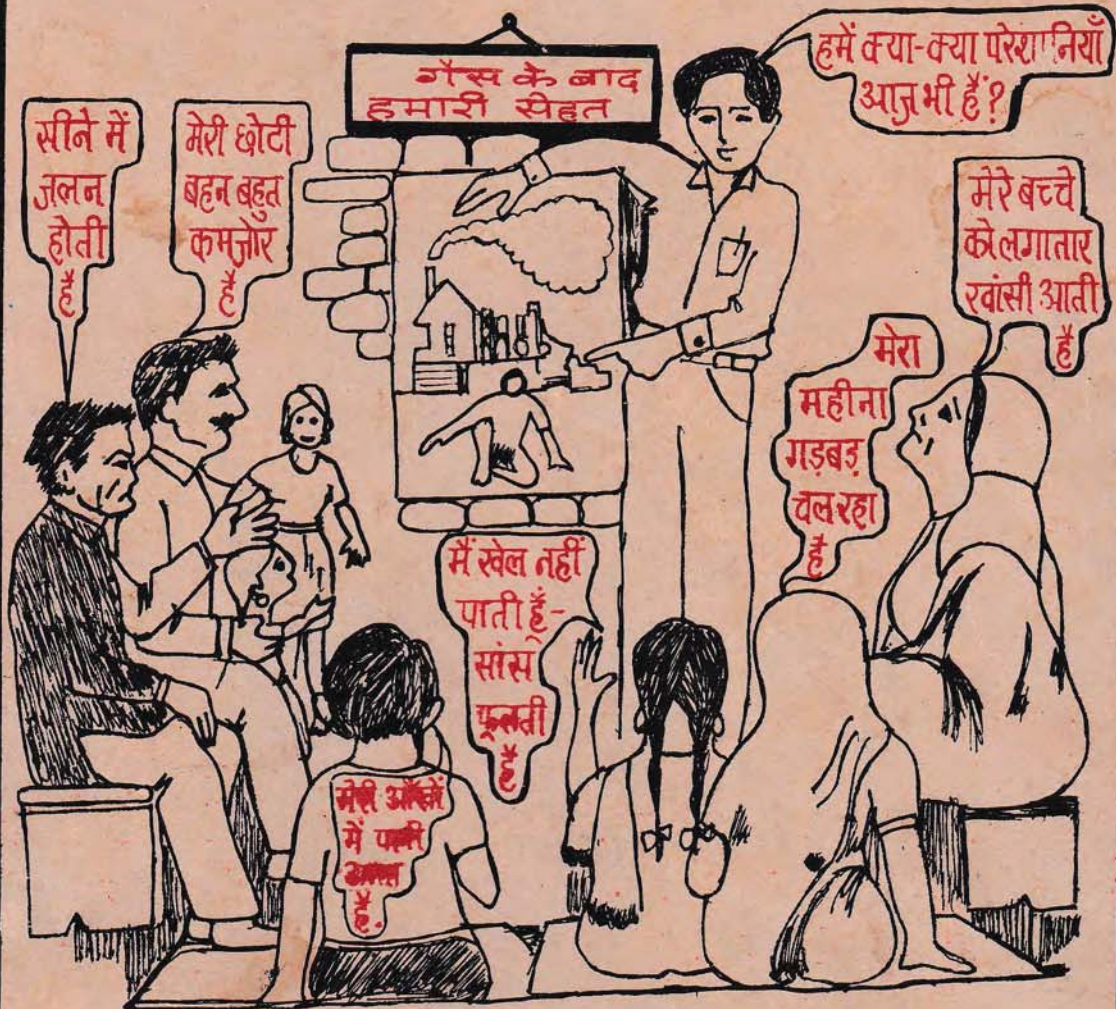


# हमारी सेहत हमारी लड़ाई

भोपाल गैस पीड़ितोंके लिए स्वास्थ्यकी पुस्तिका



मेडिको फ्रेंड्स सर्कल

1986

एकलव्य

इस  
किताब  
में  
क्या  
है?

इस किताब में भोपाल गैस हादसे से पैदा हुई स्वास्थ्य समस्याओं के बारे में चर्चा है।

- लोगों का स्वास्थ्य समस्यायें क्या हैं ?
- उनके बारे में हम क्या जानते हैं ?
- शरीर के बारे में जानकारी ।
- सही इलाज के बारे में हमें आज तक क्या मालूम है और
- क्या मालूम नहीं है ?
- सही इलाज कैसे प्राप्त किया जा सकता है ?
- स्वास्थ्य के मामले में हमारे क्या हक हैं ?

यह  
किताब  
इनके  
लिये है

- गैस पीड़ितों के लिये ।
- स्वास्थ्य कार्यकर्ताओं के लिये ।
- अन्य स्वयंसेवकों के लिये ।
- आम नागरिकों के लिये ।
- गैस पीड़ितों के बीच काम करने वाली संस्थाओं के लिये ।
- स्वास्थ्य योजना बनाने वाले और स्वास्थ्य अधिकारियों के लिये ।

इस किताब  
का  
पूरा लाभ  
उठायें

- खुद पढ़कर ।
- अनपढ़ लोगों को चित्रों द्वारा समझाकर ।
- स्वास्थ्य कार्यकर्ताओं को प्रशिक्षण देकर ।
- स्वास्थ्य और सूचना केन्द्रों में लोगों को जानकारी देने के लिये ।
- स्वास्थ्य अधिकारियों और डाक्टरों को बताकर ।

© मेडिको फ्रेंड सर्कल  
और  
एकलव्य

इस किताब की प्रतियाँ पाने के लिये इन पत्तों पर लिखें :

एकलव्य,  
ई 1/208, अरेरा कालोनी,  
भोपाल (म.प्र.)  
462 016

मेडिको फ्रेंड सर्कल  
1877, जोशी गली  
निपाणी 591 237  
जिला. बेलगाम (कर्नाटक)

इस पुस्तक के किसी भी हिस्से की नकल या अनुवाद व्यापारिक रूप से धापने के लिये प्रकाशकों  
की अनुमति आवश्यक है.

लागत मूल्य पर बेचने या मुफ्त बाँटने के लिये सहर्ष स्वीकृति है. पर प्रकाशित सामग्री की एक प्रति  
उपरोक्त पत्तों पर अवश्य भेजें.



समर्पण  
जिन्हें गैस खतम  
नहीं कर सकी!

# भूमिका



इस किताब का इतिहास गैस पीड़ितों की लड़ाई से जुड़ा है। यूनिवर्सल कार्बाइड से जहरीली गैसों के रिसन के बाद कुछ ही दिनों में यह साफ हो गया था कि ज्यादातर गैस से मरने वाले और गैस के असर से बीमार लोग गरीब हैं। इसलिये उनकी समस्याओं को नजरअंदाज करने की कोशिश लगातार होती रही है। गैस पीड़ितों को कदम-कदम पर अपने हक, मुआवजे, स्वास्थ्य और दोषी लोगों को सजा दिलवाने के लिए लड़ना पड़ रहा है। आज भी न तो सभी लोगों को अंतरिम राहत मिली है और न ही उनके इलाज का सही इंतजाम हो पाया है।

यह साफ है कि उनके स्वास्थ्य की समस्या कई सालों तक रहेगी। एक मुश्किल यह भी है कि इस तरह का हादसा पहले कभी नहीं हुआ था। इसलिये डाक्टर लोग खुद भी पूरी तरह से नहीं जानते कि इस हादसे से उपजी स्वास्थ्य समस्याएं क्या हैं, और उनका सही इलाज क्या है। जो जानकारी है वह भी बहुत कम लोगों को दी गई है। खासकर गैस पीड़ितों के पास तो बहुत ही कम लोगों ने सही जानकारी पहुंचायी है। इस माहौल में गलत इलाज, डाक्टरों (कुछ को छोड़कर) और दवा कंपनियों द्वारा मरीजों की ब्लूट आदि का बाजार गर्म रहा है। दूसरी ओर गैस पीड़ितों में अपने अच्छे होने की उम्मीद बंधने के बजाय धीरे-धीरे टूट रही है।

इन हालातों में अपने सीमित साधनों के बावजूद स्वयंसेवी संगठनों ने महत्वपूर्ण काम किया है। हादसे के तुरंत बाद हजारों स्वयंसेवक मदद के लिए कूद पड़े। सबसे पहले भोपाल के ही छात्रों, कर्मचारियों और नागरिकों ने अथक मेहनत की। आज भी गैस पीड़ितों के इलाज और हक की लड़ाई में इन स्वयंसेवी संस्थाओं और व्यक्तियों का योगदान बहुत अहम है। गैस पीड़ितों को ज्यादातर जानकारी इन्हीं लोगों की पहलकदमी से मिली है।

यह किताब भी कुछ ऐसे ही लोगों की कोशिशों का नतीजा है। इसके लिखने वालों ने भोपाल में खुद 'जन स्वास्थ्य केन्द्र' में बैठकर लोगों का इलाज किया है और गैस पीड़ितों के घरों में जाकर उनसे लंबी बातचीत की है। इसके अलावा अन्य स्वयंसेवी संगठनों के

स्वास्थ्य कार्य और जनआंदोलनों से भी सीखा है। इन संगठनों की रपटों से भी काफी जानकारी मिली। कई अखबारों और पत्रिकाओं के छपे लेखों से महत्वपूर्ण जानकारी मिली। इन जानकारियों के मूल स्रोत के पीछे अक्सर कुछ सरकारी सेवा में काम करने वाले वैज्ञानिक और डाक्टर रहे हैं जिन्होंने तमाम तरह के दबावों के बावजूद सच्चाई को सामने लाने की कोशिश की है।

कहने का मतलब यह है कि यह किताब गैस पीड़ितों के पास सही जानकारी पहुँचाने और उनके हक की लड़ाई में भागीदारी की सारी कोशिशों का एक छोटा हिस्सा है। यह भागीदारी आगे भी रहेगी, क्योंकि यह लंबी लड़ाई है। हमें उम्मीद है कि इस किताब के सही उपयोग जैसे स्वास्थ्य कार्यकर्ताओं का प्रशिक्षण, जानकारी केन्द्र चलाना आदि के साथ हम भी रहेंगे। साथ ही यह किताब उन लोगों की भी मदद करेगी जो गैस पीड़ितों के राहत और पुनर्वास के लिये एक सही योजना बनाने की कोशिश कर रहे हैं।

हम यह उम्मीद भी करते हैं कि इस प्रकार के सामूहिक प्रयास से इस किताब की कमियाँ पूरी होंगी।

एक अच्छा नेता लोगों से यह नहीं कहता कि वे यह करें।  
वह तो उनके सामने खुद काम करके आदर्श पेश  
करता है।

लोगों के स्वास्थ्य की रक्षा का  
बहुमूल्य साधन स्वयं लोग ही हैं।

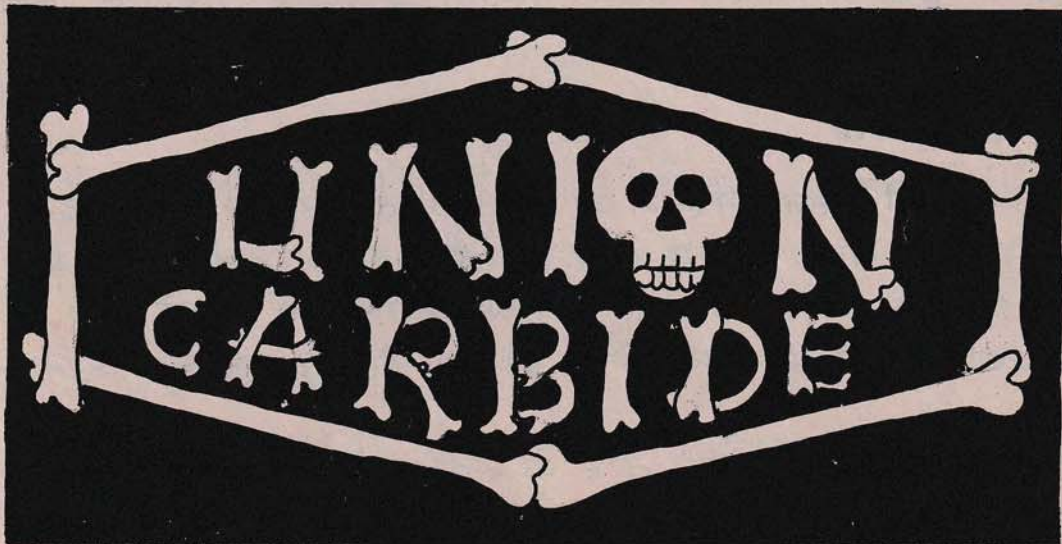
जब लोग अपने समुदाय के स्वास्थ्य की  
जिम्मेदारी अपने सिर पर लेने को तैयार हों  
तभी स्वास्थ्य बदलाव हो सकते हैं।

# इस किताब में क्या है?

		भूमिका	2
अध्याय	1	परिचय	6
	1.1	सवाल पर सवाल	6
	1.2	सही जानकारी की खोज	7
	1.3	सेहत की आम तकलीफें	7
अध्याय	2	फेफड़ों को नुकसान	10
	2.1	फेफड़ों की बनावट	10
	2.2	श्वसन पर गैसों का असर	11
अध्याय	3	फेफड़ों का इलाज	15
	3.1	समय पर पूरी जाँच	15
	3.2	फेफड़ों की समस्या	16
	3.3	और नुकसान से बचाव	19
	3.4	नया रोजगार	21
अध्याय	4	आँखों को नुकसान	22
अध्याय	5	खून पर असर	24
अध्याय	6	पेट और पाचन	28
अध्याय	7	प्रजनन अंग	30
	7.1	महिलाओं के रोग	31
	7.2	क्या समस्याएँ अभी हैं?	32
	7.3	गर्भाशय व गर्भ धारण	34
	7.4	दूध आना	35
	7.5	नवजात शिशु	35
	7.6	बच्चों की विकृतियाँ	36
	7.7	मानसिक पिछड़ापन	36
	7.8	भविष्य में गर्भधारण	37

डॉक्टर के नाम एक मजदूर का पत्र - 9

अध्याय	8	बच्चों का स्वास्थ्य	38
	8.1	बीमारी में चिकित्सा	38
	8.2	नियमित जाँच व वजन	39
	8.3	टीके	39
	8.4	सफाई क्यों और कैसे?	41
	8.5	भोजन या टॉनिक	42
	8.6	ताकत के लिये भोजन	43
	8.7	छोटे बच्चों का भोजन	44
अध्याय	9	मानसिक स्वास्थ्य	46
	9.1	बच्चे	46
	9.2	बड़े	47
	9.3	दवाईयाँ	48
	9.4	दोस्त और रिश्तेदार	48
	9.5	असली पागल कौन है?	49
	9.6	मुआवजा	51
अध्याय	10	बूढ़े लोगों के बारे में	52
	10.1	बूढ़े लोगों के लिये पेंशन	54
अध्याय	11	दवाईयाँ : कुछ सलाह	55



# परिचय



यूनियन कार्बाइड से निकली गैस ने हजारों लोगों को मौत के घाट उतार दिया और लाखों लोगों को बीमार बनाकर छोड़ दिया है। हादसे के डेढ़ साल बाद भी गैस पीड़ितों को तरह-तरह की शारीरिक तकलीफें हैं जिनका पूरा और सही जवाब नहीं मिल पा रहा है। कुछ लोग तो इतने परेशान हैं कि वे कहते हैं, हमसे तो वे अच्छे रहे जो मर गये।

## सवाल पर सवाल

- वह कौन सी गैस थी जिसने हम लोगों को इस तरह रातों-रात बरबाद कर दिया ?
- इस गैस से हमारी सेहत पर क्या असर हुआ है ? इसका इलाज क्या है ?
- आने वाले दिनों में हमें हमारी सेहत के लिए क्या करना चाहिये ?
- बच्चे, जो ज्यादा नाजुक हैं, उनकी सेहत का क्या होगा ? हमें क्या करना चाहिये ?

इस छोटी सी किताब में हम इस तरह के सवालों के जवाब देने की कोशिश कर रहे हैं। हालांकि हालात बहुत खराब हैं लेकिन आप हिम्मत न हारें। आदमी बड़ी से बड़ी

मुसीबतों का मुकाबला कर सकता है यदि वह हिम्मत रखे। हमें एक जुट होकर सही जानकारी और इलाज पाने के लिये लड़ना होगा। इसीलिये इस किताब का नाम 'हमारी सेहत - हमारी लड़ाई' रखा है।

## सही जानकारी की खोज

यूनियन कार्बाइड ने शुरू से ही गैस रिसन के बारे में सही जानकारी को छिपाया है। उनकी यह कोशिश रही है कि हादसे की जिम्मेदारी उन पर कम से कम आवे। ताकि वे कम से कम मुआवजा देकर छुट्टी पा लें। इस मामले में सरकार ने भी यूनियन कार्बाइड के खिलाफ कोई ठोस कदम नहीं उठाया है।

जो जानकारी हमारे पास है, वह अभी भी अधूरी है। यह कई वैज्ञानिकों, डॉक्टरों (जिनमें कुछ सरकारी भी है), अखबार के खोजी पत्रकारों और स्वयंसेवी संगठनों की कोशिश और लड़ाई का नतीजा है।

इन्होंने यह पता लगाया कि एम. आई. सी. (मिक) की टंकी नंबर 610 से दिसंबर 2 और 3, 1984 की रात को जो चीज निकली वह कई रासायनिक गैसों और चूरे का मिश्रण था। इनमें मिक गैस के साथ जहरीली हायड्रोजन सायनाइड गैस, कार्बन मोनो आक्साइड गैस और कई अन्य गैसों भी रही होंगी। इनमें मिक के साथ हमेशा रकी जाने वाली फार्जीन गैस भी जरूर रही होगी। मोनोमिथाइल अमीन नाम की गैस जो बहुत नुकसान देह है, हवा में मिक के टूटने से बनी होगी। इन जहरीली गैसों से ही कई हजार लोग कुछ ही समय में मर गये। बचे लोगों के शरीर में जहर फैल गया। इसमें कई तकलीफें लंबे समय तक रही हैं और रहेंगी।

नीचे उन तकलीफों की सूची दे रहे हैं जिनके बारे में लोगों ने बताया है या जो डॉक्टरी जाँच से सामने आयी हैं। साथ ही उन अध्यायों का नाम या संख्या भी लिखी है जिनमें उनकी चर्चा की गई है।

## सेहत की आम तकलीफें

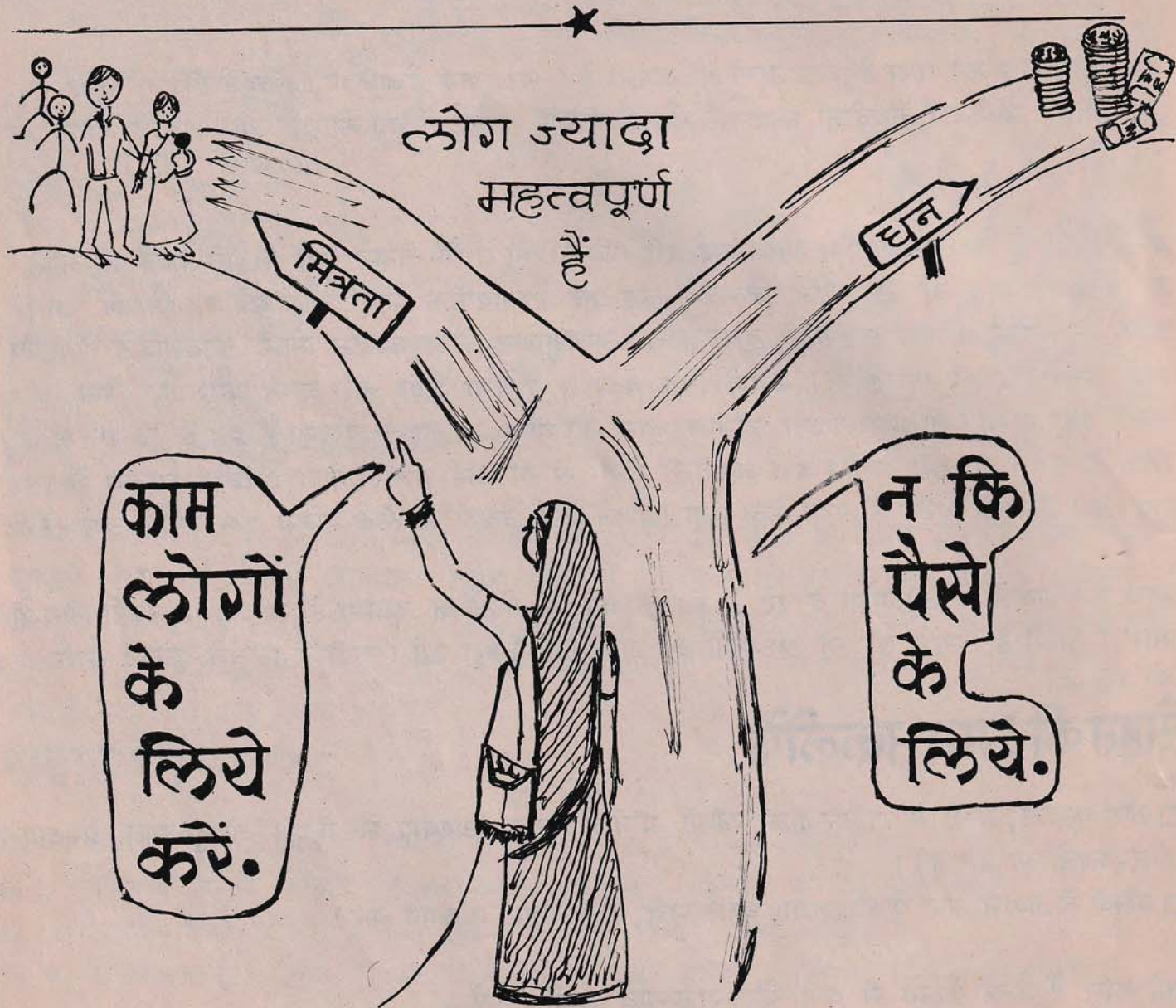
- साँस फूलना, सूखी या खरखर वाली खाँसी, सीने में जलन (अध्याय दो - फेफड़ों को नुकसान, अध्याय तीन - फेफड़ों का इलाज)।
- आँसुओं में जलन और पानी आना, खुंथलापन, चोंधियाना (अध्याय चार)

सारे शरीर में जहर फैलने से कई और समस्याएँ आयीं, जैसे -

- कमजोरी और थकान के कारण पहले जैसा काम न कर पाना (अध्याय पाँच - खून पर असर)
- पेट और पाचन में गड़बड़ी (अध्याय छह)

- महिलाओं और पुरुषों के प्रजनन अंगों की समस्याएँ (अध्याय सात)
- कमजोर बच्चे पैदा होना और उनका बार-बार बीमार पड़ना (अध्याय आठ)
- दिमागी समस्याएँ - दिल धड़कना, घबराहट, गहरी उदासीनता, या द्वादश कमजोर होना (अध्याय नौ)
- बूढ़े लोगों की विशेष समस्याएँ (अध्याय दस)

अगले अध्यायों में हमने इन सब समस्याओं की सिलसिलेवार चर्चा की है। साथ ही दवाइयों के बारे में कुछ सलाह दी है (अध्याय ग्यारह)।



# डॉक्टर के नाम एक मजदूर का पत्र

हमें मालूम है अपनी बीमारी का कारण  
वह एक छोटा सा शब्द है

जिसे सब जानते हैं

पर कहता कोई नहीं

जब बीमार पड़ते हैं

तो बताया जाता है

सिर्फ तुम्हीं (डॉक्टर) हमें बचा सकते हो

जनता के पैसे से बने

बड़े-बड़े मेडिकल कालेजों में

स्व-ब-सासा पैसा खर्च करके

दस साल तक

डाक्टरी की शिक्षा पाई है तुमने

तब तो तुम,

हमें अवश्य अच्छा कर सकोगे।

क्या सचमुच तुम हमें स्वरुचय

कर सकते हो।

तुम्हारे पास आते हैं जब

बदन पर बचे, चिथड़े खींचकर

कान लगाकर सुनते हो तुम

हमारे नंगे जिरूमों की आवाज

खोजते हो कारण शरीर के भीतर।

पर अगर

एक नजर शरीर के चिथड़ों पर डालो

तो वे शायद तुम्हें ज्यादा बता सकेंगे

क्यों घिस-पिट जाते हैं

हमारे शरीर और कपड़े

बस

एक ही कारण है दोनों का

वह एक छोटा सा शब्द है

जिसे सब जानते हैं

पर कहता कोई नहीं।

तुम कहते हो

हमें मालूम है अपनी  
बीमारी का कारण



कंधे का दर्द टीसता है

नमी और सीलन की वजह से

डॉक्टर

तुम्हीं बताओ यह सीलन कहाँ से आई ?

बहुत ज्यादा काम

और बहुत कम भोजन ने

कमजोर और दुबला कर दिया है हमें

नुरूखे पर लिखते हो

'और वजन बढ़ाओ'

यह तो वैसा ही है

दलदली घास से कही

कि वो खुश्क रहे।

डॉक्टर

तुम्हारे पास कितना वक्त है

हम जैसे के लिये ?

क्या हमें मालूम नहीं

तुम्हारे घर के एक कालीन की कीमत

पाँच हजार मरीजों से मिली फीस के

बराबर है

बेशक तुम कहोगे

इसमें तुम्हारा कोई दोष नहीं

हमारे घर की दीवार पर

घाई सीलन भी

यही कहानी दोहराती है

हमें मालूम है अपनी बीमारी का कारण

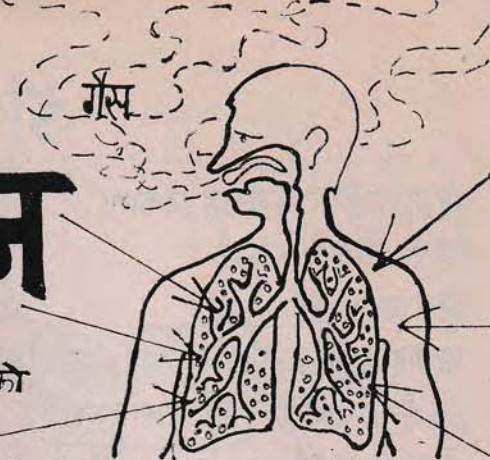
वह एक छोटा सा शब्द है

जिसे सब जानते हैं

पर कहता कोई नहीं

वह है 'गरीबी'।

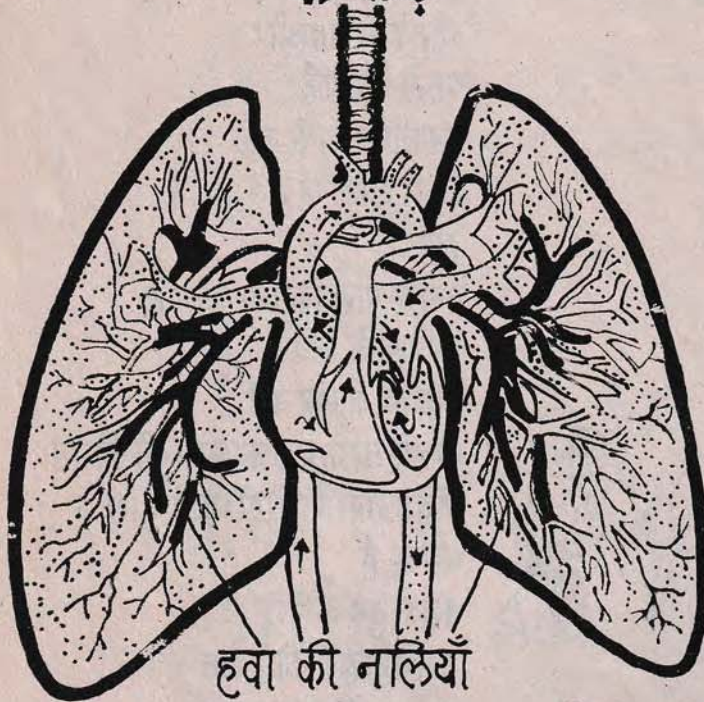
बर्टोल्ड ब्रेख्त



# फेफड़ों को नुकसान

हम अपनी बात फेफड़ों से शुरू करते हैं। जहरीली गैसों ने फेफड़ों को बहुत नुकसान पहुँचाया है। इस नुकसान को पहचानना और समझना जरूरी है। इसके लिये यह समझना भी जरूरी है कि स्वस्थ फेफड़े कैसे होते हैं और कैसे काम करते हैं।

## फेफड़े



## 2.1 फेफड़ों की बनावट

हमारे फेफड़े नीचे लिखे तीन भागों से मिलकर बनते हैं :

1. हवा की नलियों का एक जाल जो पतली-पतली शाखाओं में बँटती जाती है। यह जाल बिल्कुल पेड़ की जड़ों के जाल जैसा दिखता है।
2. ये बारीक शाखाएँ छोटी-छोटी हवा की थैलियों के रूप में खत्म होती हैं। ऐसी हजारों थैलियों के गुच्छे हैं जो अंगूर के गुच्छे जैसे दिखते हैं।
3. ये थैलियाँ छोटी व नरम नलियों के एक जाल से घिरी रहती हैं। इनको केशिकाएँ कहते हैं और इनमें खून बहता है।

हवा की नलियाँ

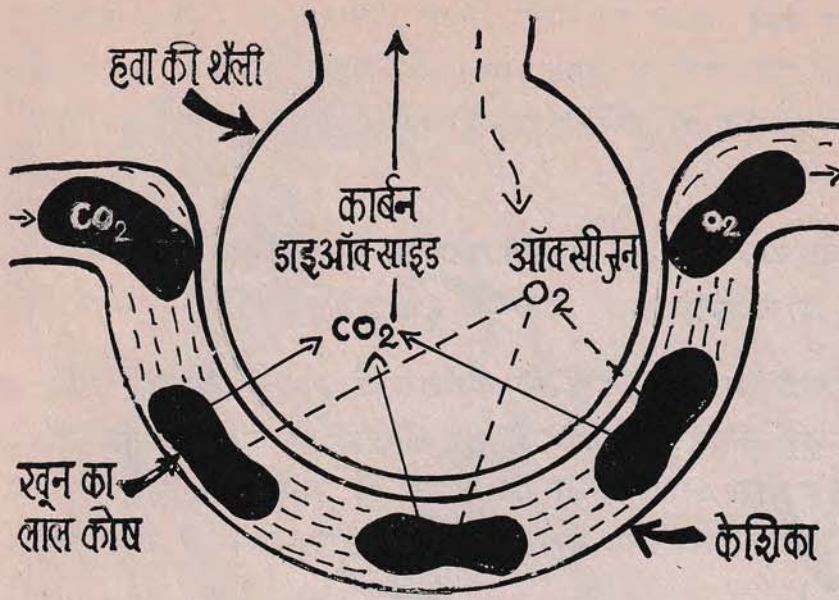


हवा की थैलियाँ

## केशिकारों



जब हम साँस लेते हैं तो हवा फेफड़ों की छोटी-छोटी थैलियों तक पहुँचती है। हवा में कई गैसों का मिश्रण होता है। इनमें से एक गैस ऑक्सीजन है जो जीवन के लिये बहुत जरूरी है। थैलियों की दीवारें बहुत पतली होती हैं। ऑक्सीजन इन दीवारों में से होकर केशिकाओं में बहने वाले खून तक पहुँचती है। खून में एक



लाभ पदार्थ रहता है जिसे हीमोग्लोबिन कहते हैं। यह हीमोग्लोबिन आक्सीजन को अपने साथ जोड़ लेता है, जैसे एक चुंबक लोहे के बुरादे को चिपका लेता है। रक्त के द्वारा यह आक्सीजन शरीर के सभी अंगों तक पहुँचती है।

आक्सीजन क्यों जरूरी है? हमारा शरीर एक इंजन की तरह है। उसे चलाने के लिये ईंधन की जरूरत पड़ती है। यह ईंधन हम अपने खाने से प्राप्त करते हैं। पाचन द्वारा यह खाना शरीर के लिये उपयोगी रसायनों में बदला जाता है।

आक्सीजन का उपयोग इसी ईंधन का इस्तेमाल करने में होता है। (चूल्हे की लकड़ी जलाने में भी इसी तरह से आक्सीजन की जरूरत पड़ती है।) आक्सीजन और भोजन की इस क्रिया से हमारे शरीर को शक्ति (या ऊर्जा) मिलती है। इसी शक्ति से हमारा शरीर ढेर सारा काम करता है।

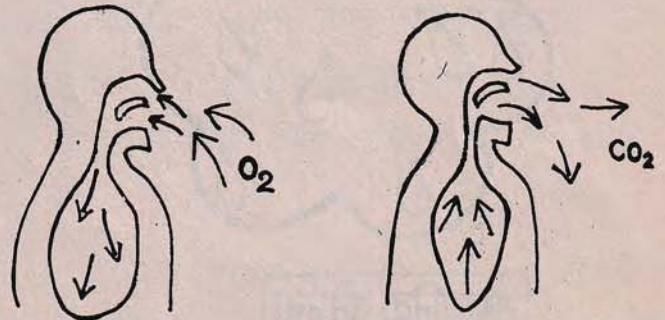
इस क्रिया में एक अन्य गैस बनती है - कार्बन डाय ऑक्साइड। यह बेकार गैस, शरीर के विभिन्न अंगों से रक्त के द्वारा फेफड़ों तक लायी जाती है। यहाँ कार्बन डाय ऑक्साइड केशिकाओं से होकर फेफड़ों की थैलियों में पहुँच जाती है। जब हम सांस छोड़ते हैं तब यह कार्बन डाय ऑक्साइड शरीर के बाहर चली जाती है।

शरीर को आक्सीजन मिलने व कार्बन डाय ऑक्साइड निकलने की पूरी क्रिया को श्वसन कहते हैं।

## 2.2 श्वसन पर गैसों का असर

यूनियन कार्बाइड की जहरीली गैसों ने श्वसन को मुख्य तौर पर तीन तरह से प्रभावित किया:

1. आसपास की हवा की आक्सीजन और शरीर के रक्त की आक्सीजन को हटाकर वहाँ विषैली गैस फैलाकर।
2. फेफड़ों की नलियों में रुकावट पैदा करके और
3. थैलियों व केशिकाओं को खराब करके, जिससे आक्सीजन का रक्त में जाना रुका।

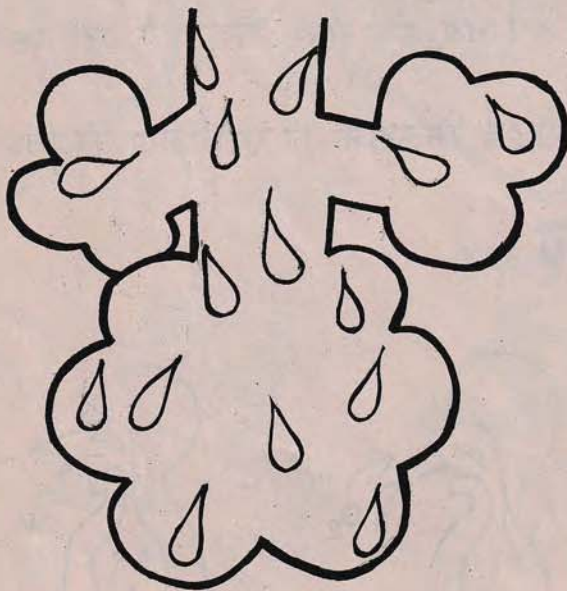


जहरीली गैस में साँस लेने पर लोगों को ऐसा लगा था जैसे मिर्ची जलायी जा रही है। फेफड़ों की नलियों में जलन होने पर पानी आता है। इस पानी ने आक्सीजन के रास्ते में एक हद तक रुकावट पैदा की। (पानी इकट्ठा होने की स्थिति को डॉक्टर पल्मोनरी इडीमा कहते हैं, यानी फेफड़ों में सूजन।)

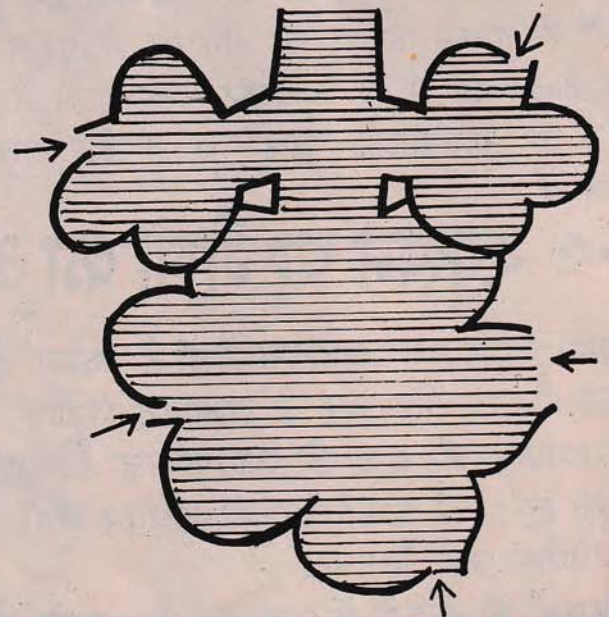
यही पानी हवा से मिलकर सफेद झाग के रूप में मुँह से निकला। कई लोग इसी कारण से मरे। एक प्रकार से उनके फेफड़े खुद के द्वारा छोड़े गये पानी में डूब गये।

सामान्य तौर पर हमारे फेफड़ों की नलियाँ व थैलियों की कोशिकायें मरती रहती हैं और नई कोशिकायें बनती रहती हैं। ये मरी हुई कोशिकायें नलियों की दीवारों से झड़कर गिरती रहती हैं, जैसे पेट्टों से पत्तियाँ गिरती हैं। हमारा शरीर हवा के रास्ते में आने वाली ऐसी अनचाही चीजों को निकाल फेंकने के लिये खाँसी का सहारा लेता है। ठीक वैसे ही जैसे नाक में कुछ चला जाये तो हमें छींक आती है।

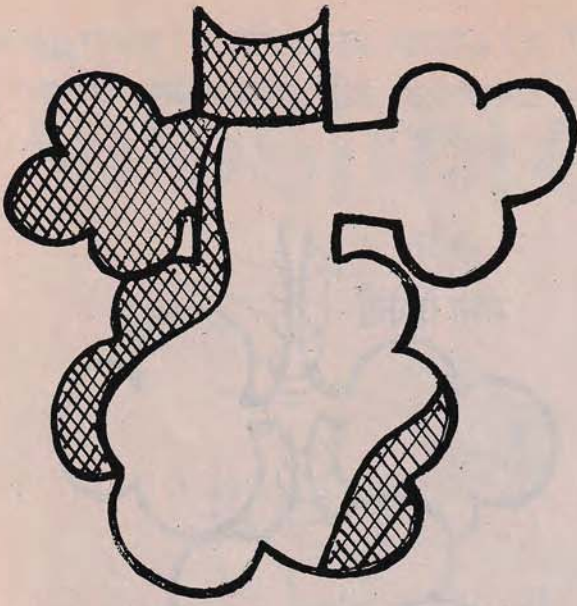
जहरीली गैस सूँघने के कारण नलियों व थैलियों की कोशिकायें बड़ी संख्या में मरीं। मृत कोशिकायें एक चिपचिपे पदार्थ के रूप में फेफड़ों में इकट्ठी हो गयी। इस पदार्थ को निकालने की कोशिश में लोगों को खाँसी आयी। जिनके फेफड़ों में अधिक नुकसान हुआ, वहाँ चिपचिपा पदार्थ नहीं निकल पाया। यह ठोस बलगम के रूप में फेफड़ों में जमा हो गया। इससे हवा के लिये रास्ता संकरा हो गया। धीरे-धीरे हवा का रास्ता बंद भी हो सकता है। इस बीमारी को डॉक्टर ब्रोंकियो लाइटीस कहते हैं।



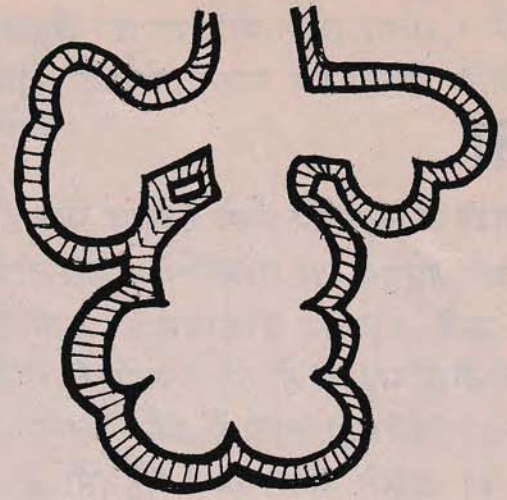
रासायनिक उत्तेजना से पानी आना



जस्तम के कारण पानी आना  
"पल्मोनरी इडीमा"



श्वास नली व थैली में कवरा चिपकना.  
"ब्रॉन्कोलाइटिस, पल्मोनोलाइटिस"



जरूमी नली व थैली पर रेशे की  
झिल्ली व सिकुड़न "फ्रायब्रोसिस"

ऐसे नुकसान के कारण फेफड़े कमजोर पड़ गये। इस हालात में संभावना यह है कि फेफड़ों के घावों में कीटाणु आसानी से घुस जाते हैं। कीटाणुओं के घुसने और उनके कारण शरीर में मवाद बनने को छूत की बीमारी कहते हैं। फेफड़ों की छूत की बीमारी को खरखार में आने वाले मवाद को देखकर पहचाना जा सकता है। कभी-कभी बुखार भी आ सकता है। इससे रवाँसी बढ़ती है और साँस भी अधिक फूलती है।

झय रोग या टी.बी. भी एक छूत की बीमारी है जो कि इसके कीटाणुओं द्वारा कमजोर फेफड़ों और शरीर पर हमला करने से होती है।

कुछ लोगों के फेफड़े गैस से रासायनिक रूप से जरूमी हुये हैं। जरूम धीरे-धीरे नये रेशेदार उत्तकों से भर गये। इसे फ्रायब्रोसिस कहते हैं। हमारी चमड़ी पर जब कोई घाव भरता है तो यही होता है और मुलायम चमड़ी की जगह पर एक दाग बन जाता है।

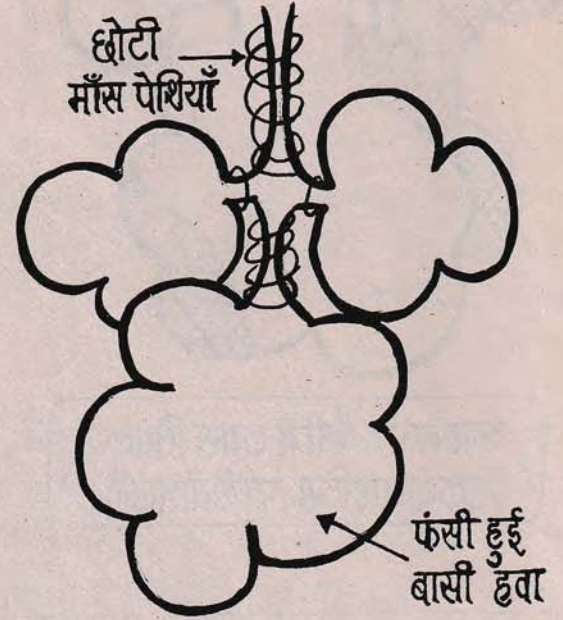
फ्रायब्रोसिस के कारण फेफड़ों की नलियों और थैलियों की दीवारें मोटी हो जाती हैं। इससे ऑक्सीजन का केशिकाओं में पहुँचना और कार्बन डाय ऑक्साइड का निकलना धीमा और मुश्किल हो जाता है।

फ्रायब्रोसिस फेफड़ों को सिकोड़ सकता है जिससे फेफड़े पहले जितनी हवा भर सकते थे अब, उतनी हवा नहीं भर सकते हैं। फ्रायब्रोसिस गंभीर रूप से होने पर साँस हरदम फूलती है और बहुत तकलीफ होती है। यह रोग ऐसे मजदूरों को अक्सर होता है जो ऐसे काम करते हैं जिनमें फेफड़ों में रासायनिक गैसों, रेशे, धूल या धुएँ के कण घुसते रहते हैं।

गैस पीड़ितों पर पहले के मुकाबले अब इन चीजों का ज्यादा असर होगा। कपड़ा मिल, दाल मिल, पत्थर और सीमेंट का काम, पुट्टा मिल, प्लास्टिक और रासायनिक उद्योग, धुंवाले चूल्हों पर खाना पकाना आदि इसी तरह के काम हैं।

## दमा

कुछ लोगों में जहरीली गैसों (शायद निक ही से) ने अति-संवेदनशीलता या एलर्जी पैदा कर दी है। इससे उन्हें दमे की शिकायत हो गयी है। जब दमे का दौरा पड़ता है तो फेफड़ों की नलियाँ यकायक संकरी हो जाती हैं और जितनी हवा शरीर को चाहिये उससे कम पहुँचती है। इससे साँस जोरों से फूलती है। संकरी हो गयी नलियों में हवा बहने के कारण सीटी बजने जैसी आवाज पैदा होती है। यह आवाज रोगी की पीठ या छाती पर कान लगाकर सुनी जा सकती है। रोगी को डाक्टर की सहायता की जरूरत पड़ सकती है।



## पेशियों की थकान

साँस फूलने का एक कारण यह भी है कि साँस लेने में लगने वाली पेशियाँ कमजोर पड़ गयी हैं। यह कमजोरी जहरीली गैस से किस तरह पैदा हुई है यह अब तक ठीक से मालूम नहीं हो सका है।

## रुवा-रुधिर की देखभाल के दो अलग दृष्टिकोण



# फेफड़ों का इलाज



## 3.1 समय पर पूरी जाँच

अपने फेफड़ों और साँस लेने की ताकत की पूरी और समय-समय पर मेडिकल जाँच की जरूरत को समझें। यह आपके स्वास्थ्य और खुशहाली के लिये तो जरूरी है ही, जहरीली गैस का लोगों पर कितना असर पड़ा यह मापने के लिये भी महत्वपूर्ण है। अब तक स्वास्थ्य अधिकारियों ने इसे गंभीरता से नहीं लिया है। यदि वे लेते तो आपमें से हरेक के पास एक स्वास्थ्य कार्ड होता और डॉक्टर या स्वास्थ्य कार्यकर्ता समय-समय पर जाँच के लिये बुलाते। आपको सही इलाज की माँग करनी चाहिये और इसलिये इसका मतलब समझना होगा। यदि गैस रिसन के बाद आपको खाँसी या साँस फूलने की तकलीफ हुई है तो आपकी डॉक्टर जाँच होनी चाहिये और एक कार्ड पर जाँच के कुछ महत्वपूर्ण नतीजों को दर्ज करना चाहिये। विशेष जाँच जरूरी हो तो वह होनी चाहिये। नयी जाँच के नतीजों को पिछली जाँच के नतीजों से तुलना करके देखना चाहिये।

डॉक्टर सबसे पहले शरीर की बाहरी जाँच करता है जिसमें वह स्टेथेस्कोप से आपकी छाती की आवाज भी सुनता है। उसके बाद फेफड़ों में हवा की जगह और आपकी साँस लेने की ताकत को मापना चाहिये। यह एक छोटी इलेक्ट्रॉनिक मशीन स्पाइरोमीटर की सहायता से करता है - जिसमें वह आपको फूँकने के लिये कहेगा। स्पाइरोमीटर जाँच के नम्बर को कार्ड में दर्ज करना चाहिये।

यदि रवाँसी में बलगम आता है तो टी. बी. के कीटाणुओं की जाँच करनी चाहिये, विशेषकर यदि आपका स्वास्थ्य न सुधर रहा हो तब। एक्स-रे की भी जरूरत पड़ सकती है। आपका अधिकार है कि सनी जाँच सरकारी द्वाखाने में मुफ्त में करवा सकें।

## 3.2 फेफड़ों की समस्या

जो बच गये हैं उनका पल्मोनरी एडिमा काफी दिन पहले ही ठीक हो गया है। आज गैस पीड़ितों को नीचे लिखी तकलीफें हैं जो उन्हें साँस लेने में दिक्कत देती हैं :

1. ब्रोंकियोलाइटिस, साँस की हवा की नली को बंद करने वाली लम्बी बीमारी,
2. फ्रायब्रोसिस, साँस लेने में तकलीफ देने वाली लम्बी बीमारी,
3. दमा,
4. फेफड़ों की आम छूत की बीमारियाँ जैसे ब्रोंकाइटिस और निमोनिया,
5. टी. बी.
6. रवाँसी,
7. थोड़े काम के बाद साँस फूलना,।

इलाज (जहां संभव है) रोग पर निर्भर करता है।

## ब्रोंकियोलाइटिस

इन रोगों की शुरुआत में कुछ दवाओं से जिन्हें ब्रोकोडायलेटर कहते हैं, राहत मिल सकती थी। इसके अलावा भाप से साँस लेने से, साँस लेने के व्यायाम करने से और सिर को छाती और बाकी शरीर की तुलना में नीचे रखकर साँस लेने व साथ-साथ पीठ और बगल में जोर-जोर से थपथपाने से फायदा हो सकता था। इससे हवा की नली में फँसे हुये चिपचिपे पदार्थों को निकालने में मदद मिल सकती थी। लेकिन जिन लोगों को यह रोग अब भी है, इन तरीकों से फायदा नहीं होगा। फिर भी इन्हें आजमाया जा सकता है यदि उनसे कुछ फायदा हो रहा है और खासकर यदि छूत की बीमारी हो।

## फ्रायब्रोसिस

यह फेफड़ों में खिंचाव लाने वाला रोग है और एक बार इसके होने के बाद इसके लिये कुछ भी नहीं किया जा सकता है। सिवाय इसके कि इसे मापा जाये और इससे जितनी विकलांगता आती है उस अनुपात में मुआवजा माँगा जाये।

# दमा

तकलीफ से बचने के लिये सही इलाज जरूरी है। लम्बे इलाज के लिये और दौरे पड़ने पर राहत के लिये सौंस के व्यायाम मदद कर सकते हैं। इसके अलावा ब्रोंकोडायलेटरस दवाईयाँ भी कुछ राहत दे सकती हैं। आमतौर पर गोलियों से काम चल जाता है लेकिन बहुत गंभीर हालत हो तो इन्जेक्शन देने की जरूरत पड़ सकती है। आजकल दमे की दवा सुंघनियों (इनहेलर) में भी आती हैं जिससे जल्दी राहत पाने के लिये कम दवा लगती है।

एक दवाई, जिसे 'स्टीराइड' कहते हैं, दमे के गंभीर दौरे पड़ने पर जान बचा सकती है। किंतु दमे के रोगी स्टीराइड दवाओं पर जल्दी ही निर्भर हो जाते हैं और इनके काफी खराब असर भी होते हैं। इसलिये दमे के रोगियों को यह दवा कम से कम देनी चाहिये। यदि आप दमा के रोगी हैं तो यह जानना चाहिये कि कौन सी दवा स्टीराइड है।

यहाँ दवाओं के वैज्ञानिक नाम लिखे हैं। दवा कम्पनिया अलग-अलग नामों से दवाइयों को बेचती हैं किन्तु उन्हें दवाओं के वैज्ञानिक नाम भी छापना पड़ता है। अक्सर यह छोटे अक्षरों में अंग्रेजी में छपा होता है। इसलिये किसी की मदद से यह जानना चाहिये कि बाजार में बिकने वाली कौन सी दवा काम की है।

## फेफड़ों की धूत की बीमारियाँ

ब्रोंकाइटिस और निमोनिया जैसी बीमारियाँ गैस पीड़ितों में अधिक हो सकती हैं, क्योंकि उनके फेफड़े मिक गैस के कारण पहले ही कमजोर हो गये हैं मिक शरीर की धूत की बीमारियों से बचाने की ताकत को कम करती है। यदि रोगी को र्वीसी के साथ पीला बलगम आता है, बुखार आता है और सौंस फूलती है तो डॉक्टर को दिखाना चाहिये।

## कुछ भाम दवाईयाँ

### ब्रोंकोडायलेटर (दमा)

BRONCHODILATORS

एड्रेनालीन (ADRENALINE)	इंजेक्शन
एफीड्रीन (EPHEDRINE)	गोलियाँ
अमीनोफायलीन (AMINOPHYLLINE)	गोलियाँ
थियोफायलीन (THEOPHYLLINE)	गोलियाँ और सिरप
डेरिफायलीन (DERIPHYLLINE)	इंजेक्शन
टरबुलालीन (TERBULALINE)	गोलियाँ
सालबुटामोल (SALBUTAMOL)	गोलियाँ, इंजेक्शन, सुंघनी

### स्टीरायड (दमा) STEROIDS

हायड्रोकार्टीजोन (HYDROCORTISONE)	इंजेक्शन
प्रेडनीसालोन (PREDNISALONE)	गोलियाँ
डेक्सामथाजोन (DEXAMETHASONE)	गोलियाँ
बीटा मेथाजोन (BETAMETHASONE)	गोलियाँ

### एंटीबायोटिक (धूत की बीमारियाँ)

सल्फोनामाइड (SULFONAMIDE)	गोलियाँ
(या सल्फा दवाईयाँ) (SULFA)	
पेनीसीलीन (PENICILLIN)	गोलियाँ, इंजेक्शन
टेट्रासायक्लीन (TETRACYCLINE)	कैप्सूल, इंजेक्शन
'सल्फा' और ट्रायमथोपोरीन (SULFA/TRIMETHOPRIM)	
(को-ट्रायमोक्साजोल) (CO-TRIMOXAZOLE)	गोलियाँ, सिरप

एरिथ्रोमायसीन (ERYTHROMYCIN) गोलियाँ, सिरप  
टी.बी.

स्ट्रेप्टोमायसीन (STREPTOMYCIN)	इंजेक्शन
आइसोनेक्स (या आई.एन.एच.) (ISONEX)	सफेद गोली
थायासेटाजोन (या टी.एच.2) (THIACETAZONE)	पीली गोली
पी. ए. एस. (P.A.S.)	दाने या गोली

### टी.बी. की नई दवाईयाँ

इथाम्बुटाल (ETHAMBUTOL)	गोली
रिफायम्पीसीन (RIFAMPICIN)	कैप्सूल
पिराजीनामाइड (PIRAZANIMIDE)	गोली

रुंटीबायोतिक दवाओं के पूरे कोर्स लेना चाहिये जो छूत की बीमारियों के कीटाणुओं को मारते हैं। टी. बी. भी कीटाणुओं द्वारा होने वाली छूत की बीमारी है। गैस रिसन के पहले भी यह रोग गैस प्रभावित इलाके के गरीबों में मौजूद था। गैस रिसन के बाद यह और बढ़ सकता है।

सरकार की टी. बी. रोकथाम की एक राष्ट्रीय योजना है जिसके अनुसार हरेक टी. बी. मरीज को पूरा इलाज मुफ्त मिलना चाहिये। इलाज पूरा होने में डेढ़ साल लगता है और समय-समय पर जांच जरूरी है।

यदि इन दवाओं से फायदा न हो रहा हो या जिन लोगों का इलाज लगातार न हुआ हो और जिनमें ये दवायें अब असर नहीं करती हों तो अब कुछ नयी और मंहगी दवायें मिल रही हैं।

ज्यादा अच्छा होगा, कि पहले तीन महीने लगातार सरकारी दवाखानों से पहले से चलने वाली और सस्ती दवाओं का इस्तेमाल करके देखें फायदा न होने पर मंहगी दवाओं का इस्तेमाल करें।

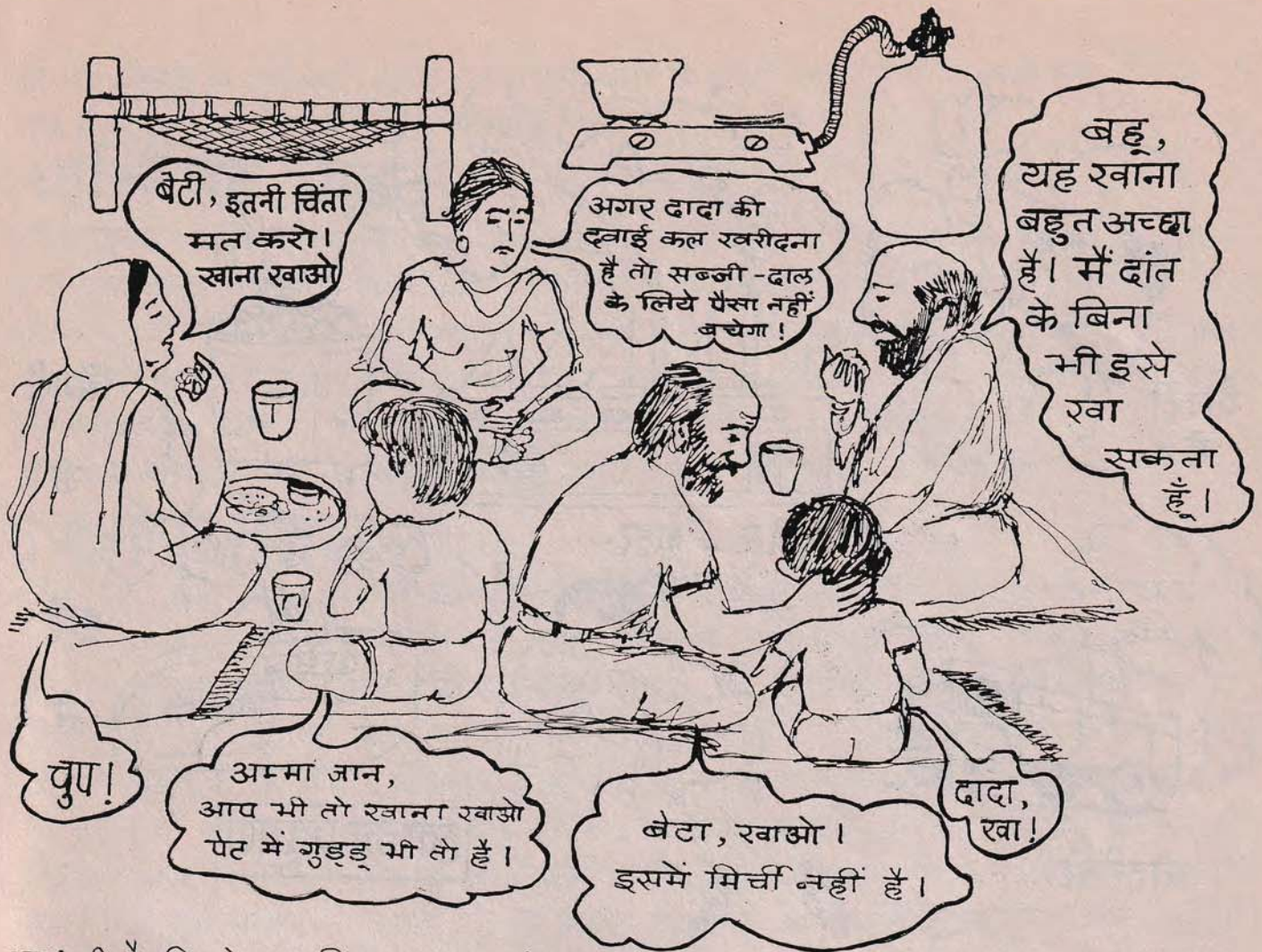
## खाँसी

ज्यादातर फेफड़ों की बीमारियों से सूखी खाँसी या बलगम के साथ खाँसी आती है। यदि खाँसी में बलगम आता है और खासकर जब कि बलगम में छूत की बीमारी हुई है (मवाद है) तो यह जरूरी है कि फेफड़ों से ज्यादा से ज्यादा बलगम निकाला जाये। पीने की गरम चीजें और भाप की साँस लेने से फायदा होता है। सिर और छाती को नीचे करके खाँसने और पीठ थपथपाने से भी बलगम निकालने में मदद मिलती है।

यदि खाँसी सूखी है और रात को नींद नहीं आने देती है तो सस्ती रुंटीहिस्टामीन की गोलियाँ काफी होंगी। इनमें सबसे आम दवा है क्लोरफेनीशमाइन, जो बाजार में कई नामों से बिकती है। यदि रुंटीहिस्टामीन काफी नहीं है तो डॉक्टर आपको कुछ दिनों के लिये कोडीन की गोलियाँ देगा। रात को सोते वक्त एक गोली लेने से खाँसी से भी आराम मिलेगा और अच्छी नींद भी आयेगी। मंहगे कफ सिरप या कफ लोजेंज न खरीदें। इसके बदले गरम काढ़ा लें जिसमें अदरक, काली मिर्च, तुलसी, हल्दी, अजवाइन और गुड़ जैसी घरेलू दवायें होती हैं, जो पीढ़ी दर पीढ़ी लोगों को खाँसी से आराम देती आई हैं।

## साँस फूलना

ज्यादातर गैस पीड़ितों की शिकायत है कि थोड़े से काम के बाद उन्हें थकान आती है और साँस फूलती है। इनका किसी फेफड़े की बीमारी से सीधा सम्बन्ध नहीं है। (बल्कि जैसा कि अध्याय पाँच में बताया जायेगा) यह शरीर में जहर फैलने के कारण हुआ है, जिससे खून में आक्सीजन के इस्तेमाल करने में रुकावट पहुँची। यह देखा गया है कि सोडियम थायोसल्फेट इन्जेक्शन से इस तरह की थकान और साँस फूलने में कुछ और कमी-कमी फायदा पहुंचता है। सोडियम थायोसल्फेट जो कि सायनाइड जहर की जानीमानी काट है, को बड़े-बड़े डॉक्टरों ने भोपाल में उपयोग करने के लिये कहा है। इनमें भारतीय आयुर्विज्ञान शोध परिषद (आ.सी.एन.)



आर.) भी है जिसने इस विषय पर जनवरी, 1985 में 'उबल बनाइंड' प्रयोग किया था। सोडियम थायोसल्फेट पर विस्तार से अध्याय पाँच में चर्चा की गई है। हम इसे उन गैस पीड़ितों को लेने के लिये कहेंगे जिनकी आज भी थोड़े से काम के बाद साँस फूलती है। उन्हें इसकी (सिज़्डीक के पॉलीक्लीनिक या जन स्वास्थ्य केन्द्र से) माँग करनी चाहिये। क्योंकि इससे अब भी उन्हें राहत मिलने की और शरीर से बचा-खुचा जहर निकालने की संभावना है।

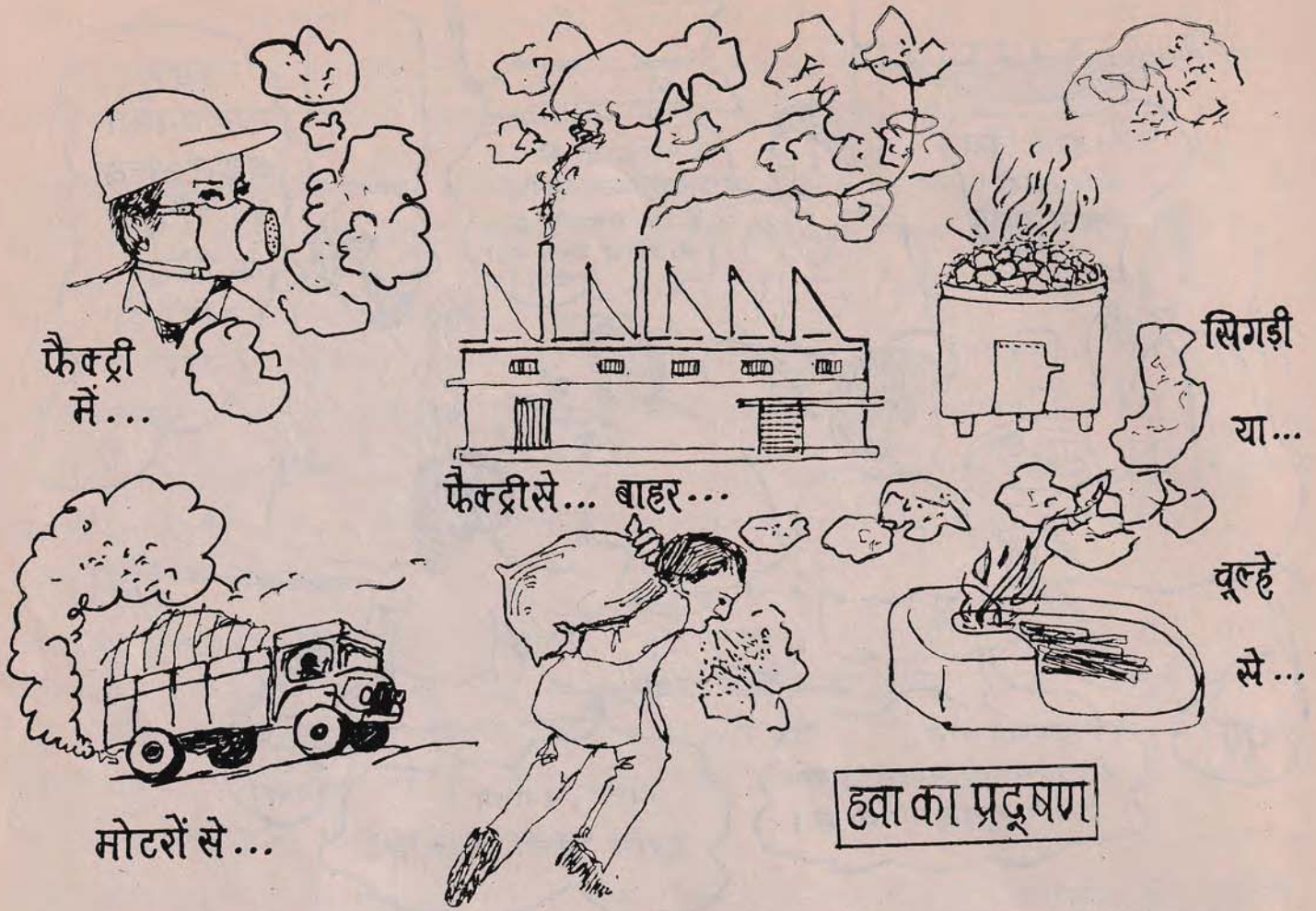
## उ-उ और नुकसान से बचाव

गैस पीड़ितों को उनके फेफड़ों के और भी ज्यादा नुकसान होने से बचाने के लिये, बचाव के तीन पहलुओं पर ध्यान देना चाहिये:

1. शरीर और फेफड़ों को ताकत देने के लिये पौष्टिक भोजन
2. हवा में प्रदूषण (गंदगी फैलाने वाली चीजों) से बचाव और
3. व्यक्तिगत आदतों में सुधार

## पोषण

इस पुस्तिका के अन्य अध्यायों में हमने बच्चों, गर्भवती महिलाओं और बूढ़ों के पोषण की



विशेष जरूरतों पर चर्चा की है। परन्तु साधारण वयस्क महिलाओं और पुरुषों के लिये भी, ताकत वापस लाने के लिये और बीमारियों से बचाव के लिये सन्तुलित और पर्याप्त आहार जरूरी है। चूँकि ज्यादातर गैस पीड़ितों की काम करने और आमदनी की क्षमता घट गई है, पोषण का प्रश्न बहुत महत्वपूर्ण हो जाता है। जरूरत के मुताबिक मुफ्त राशन तब तक मिलना चाहिये जब तक कि लोगों का स्वास्थ्य और कमाने की ताकत पूरी तरह से सामान्य नहीं हो जाती है। राशन की दुकानों से अनाज के अलावा खाने का तेल, चीनी दाल भी मिलना चाहिये।

## हवा में प्रदूषण

धुंआ, धूल रेशे और रासायनिक धूरें वाले वातावरण से बचिये। इसके लिये आप कुछ विशेष रोजगार या धंधे नहीं कर सकेंगे। या फिर कारखाने के मालिक को सुरक्षा के ऐसे उपाय करने होंगे जिससे खतरनाक पदार्थ सौंस के साथ शरीर में घुसने से रोके जा सकें (जैसे सुरक्षा नकाब आदि)। सरकार को प्रदूषण रोकने के लिये क़ानून बनाने होंगे, ताकि उद्योगों का वातावरण प्रदूषित करने से रोका जा सके। चूँकि लकड़ी, कोयले या घासलेट से खाना पकाने में धुआँ पैदा होता है, इसलिये सरकार को चाहिये कि वह गैस पीड़ितों को गैस के चूल्हे प्राथमिकता के आधार पर मुहैया करावे। गैस चूल्हों के बाद गैस पीड़ितों के स्वास्थ्य की दृष्टि



# आँखों को नुकसान



गैस रिसन के समय गले में घाँस लगने के साथ-साथ आँखों में तेज जलन और पानी आने की शिकायत भी देखी गई है। आँखों को मसलने की इच्छा होती थी। बहुत कम लोगों को पता था कि मसलने के बजाय आँखों पर पानी छींटना था और पूरे चेहरे को जीले कपड़े से ढक लेना था। धीरे-धीरे आँखों में सूजन तथा अधिक पानी आने लगा। जो लोग फेक्ट्री के पास रहते थे, वे कई दिन तक आँख नहीं खोल सके। उनकी आँखों में तीखा दर्द होता रहा।

कुछ समय बाद सूजन कम हो गयी। पर जलन होती रही और पानी आता रहा। आग पर खाना पकाना मुश्किल हो गया क्योंकि धुएँ से आँखों में तकलीफ होती थी। चकाचौंध के कारण धूप में काम करने में भी तकलीफ होने लगी। धुँधला नजर आने लगा। दर्जी, सायकल या मोटर मैकेनिक, बीड़ी मजदूर, ट्रक ड्रायवर आदि लोगों को अपना काम करने से आँखों में तकलीफ होने लगी। कड़ियों को तो काम छोड़ना भी पड़ा। कुछ लोगों को आज भी ऐसी तकलीफें हैं

जो गैस रिसन के पहले नहीं थीं। इससे पता चलता है कि गैस ने आँखों पर केवल अस्थायी असर नहीं डाला। आँखों की बनावट को भी प्रभावित किया। यह बात बहुत अच्छी तरह से नहीं समझी जा सकी है, पर कुछ डॉक्टर और वैज्ञानिक जवाब ढूँढने की कोशिश कर रहे हैं।

पानी आना

जुलन लगना

रोशनी न सह पाना

कचरा आना

बहुत कम लोगों की आँखों के पारदर्शी हिस्से (कोर्निया) पर सफेद धब्बे देखे गए हैं। चिकित्सा की भाषा में इसे कोर्निया अपारदर्शिता कहते हैं। इसके कुछ मामलों में आँखों की रोशनी बहुत कमजोर हो गयी है। कुछ की आँखों के लेंस अपारदर्शी हो गये हैं।

कुछ डॉक्टरों का कहना है कि कोर्निया अपारदर्शिता और मोतियाबिंद गैस की वजह से नहीं हुआ है। लोग ज्यादा भुआवना पाने के लिये झूठ बोल रहे हैं। उनको ये तकलीफें पहले से ही थीं। कुछ मामलों में यह बात सच हो सकती है पर ज्यादातर मामलों में यह कहना सही नहीं होगा। मरीजों के रिकार्ड इतनी बुरी तरह लिखे गये हैं कि गैस

धुँधला दिखना

सफेद दाग

मोतियाबिंद

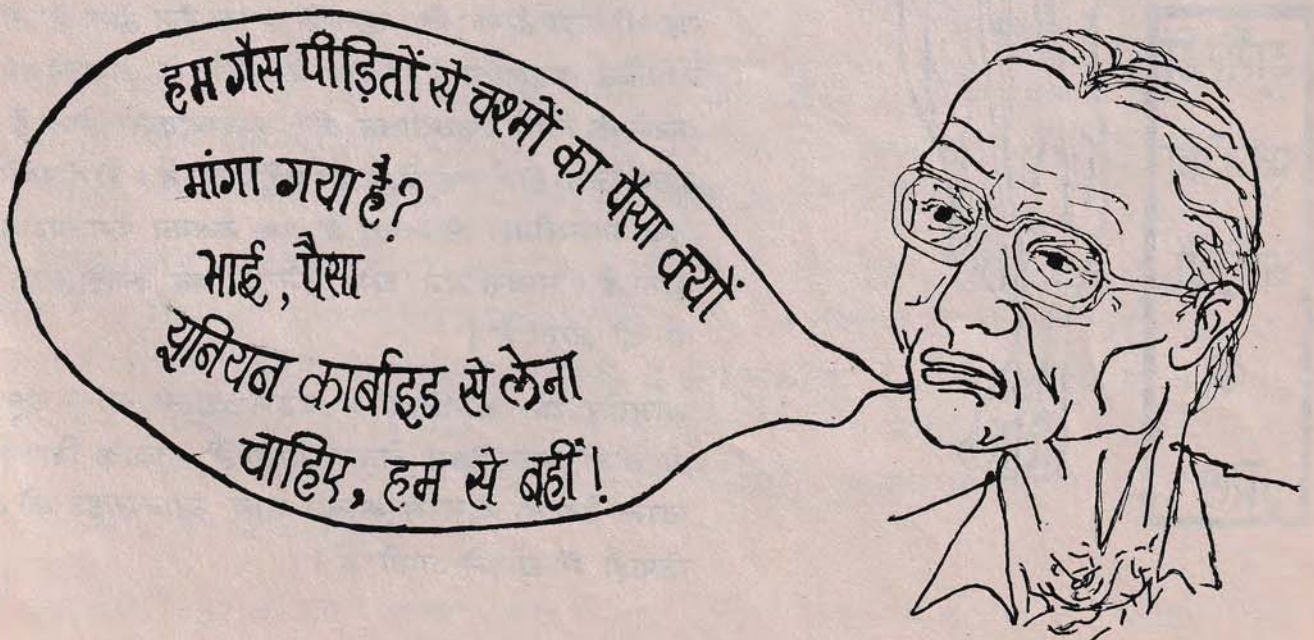
कैं ढेर से अस्तर होने पर उभरी तकलीफों को साबित करना मुश्किल है।

वैज्ञानिकों ने पाया है कि चूहों को मिक के पास रखने से कुछ समय बाद उनकी आँरवों में मोतियाबिन्द बन जाता है। इसलिये संभव है कि रवासकर कम उम्र लोगों में मोतियाबिन्द गैस के अस्तर से हुआ हो।

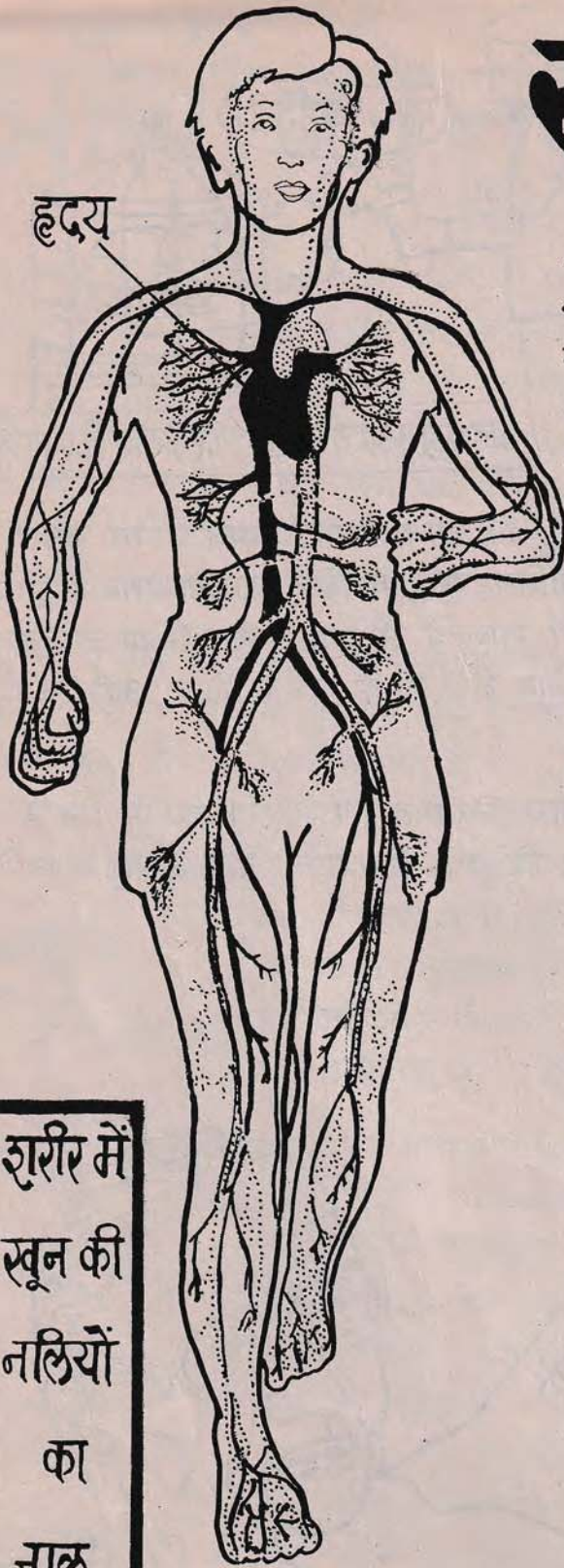
जिन लोगों को कोर्निया अपारदर्शिता या मोतियाबिन्द के अलावा किसी और कारण से नजर में

दिक्कत है उन्हें चश्मा लगाने से मदद मिलेगी। आँरवों की मुफ्त जाँच व मुफ्त चश्मा पाना गैस पीड़ितों का हक है। कोर्निया अपारदर्शिता या मोतियाबिन्द की चिकित्सा आपरेशन के द्वारा की जा सकती है। यह सुविधा भी मुफ्त होगी। जिन मामलों में यह साबित किया जा सकता है कि कोर्निया अपारदर्शिता या मोतियाबिन्द गैस के प्रभाव से हुआ है, उनके लिये अतिरिक्त मुआवजे की माँग की जाना चाहिये।

लोगों को माँग करनी चाहिये कि उनकी आँरवों की जाँच नियमित रूप से हो। जाँच के रिकार्ड सरल हिन्दी में रखे जायें। इससे लोगों को पता रहेगा कि क्या लिरवा जा रहा है। यह जानकारी पाना लोगों का हक है।



# खून पर असर



शरीर में  
खून की  
नलियों  
का  
जाल

जहरीली गैसों के फेफड़ों में से होकर खून में मिल जाने के कारण फेफड़ों व आँखों के अलावा शरीर के अन्य अंगों पर भी असर पड़ा है। गैस रिसन के बाद पहले दो दिन में सैफ़ड़ों लाशों के पोस्टमार्टम से यह पता चला कि पूरे शरीर का खून चटक लाल रंग का हो गया था। गैस पीड़ित लोगों के चेहरे व चमड़ी पर भी लाली देखी गयी थी। खींचे गये रंगीन फोटो में यह साफ दिखती है। कुछ अंगों (जैसे दिमाग) में तो शिराओं और धमनियों में अंतर कर पाना मुश्किल हो गया था। क्योंकि वे एक ही रंग की दिखती थीं। आमतौर पर शिरायें नीली दिखती हैं, क्योंकि उनमें काले लाल रंग का खून होता है। पर गैस रिसन के बाद शिराओं में भी धमनियों की तरह चटक लाल रंग का खून पाया गया।

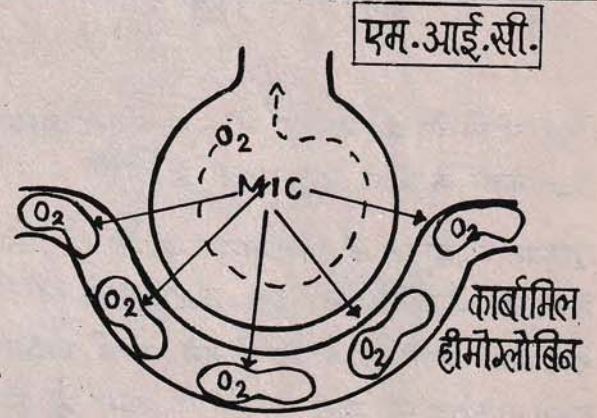
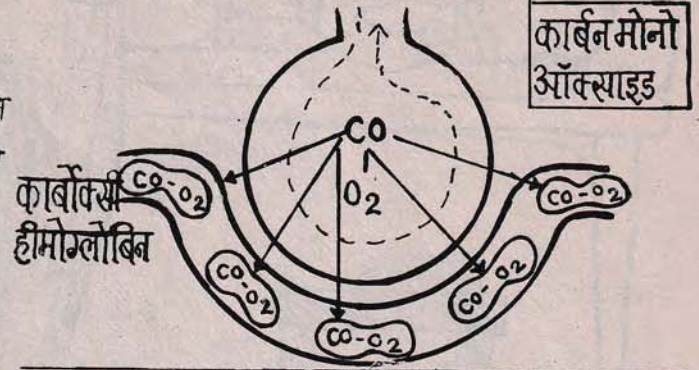
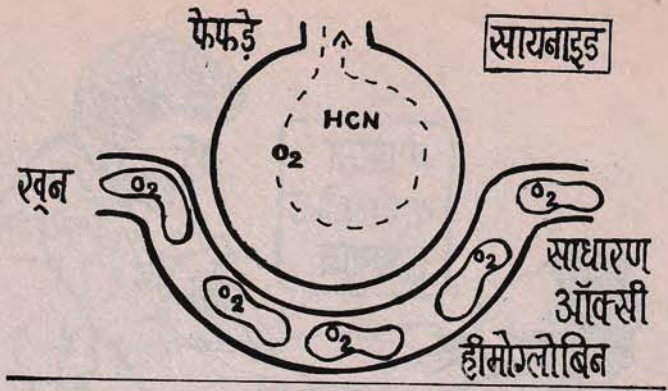
खून इस तरह लाल क्यों हो गया था?

अध्याय दो में आपने पढ़ा होगा कि फेफड़े कैसे काम करते हैं। फेफड़े हवा से आक्सीजन लेकर खून में पहुँचाते हैं और कार्बन डाय आक्साइड छोड़ते हैं। आपने यह भी पढ़ा होगा कि खून में लाल रंग होता है जो हीमोग्लोबिन कहलाता है। शरीर के अंगों के ऊतकों को काम करने के लिये आक्सीजन की आवश्यकता होती है। यह आक्सीजन हीमोग्लोबिन ही पहुँचाता है। हीमोग्लोबिन जब आक्सीजन ले जाता है तब उसका रंग चटक लाल होता है। आक्सीजन छोड़ देने पर वह काले लाल रंग का हो जाता है।

आमतौर पर धमनियों में बहने वाला लाल खून फेफड़ों से ताज़ी आक्सीजन लेकर आता है, जबकि शिरायें काले लाल रंग के खून में कार्बन डाय आक्साइड को लेकर फेफड़ों में छोड़ने जाती हैं।

शरीर में खून चटक लाल रंग का क्यों हो गया था? वैज्ञानिकों ने इसको समझने की कोशिश की है। उनका कहना है कि इस लक्षण के तीन संभव कारण हो सकते हैं;

1. सायनाइड गैस ने शरीर के सभी ऊतकों में जहर भर दिया। जिससे वे खून की ऑक्सीजन का उपयोग नहीं कर पाये।
2. कार्बन मोनो आक्साइड गैस हीमोग्लोबिन को इस तरह बदल देती है कि वह न तो आक्सीजन छोड़ सकता है और न ही कार्बन डाय आक्साइड ले सकता है।
3. मिथायल आइसो सायनेट (मिठ) हीमोग्लोबिन के साथ जुड़कर उसकी आकृति बदल देता है, जिससे वह न तो आक्सीजन छोड़ सकता है और न ही कार्बन डाय आक्साइड ले जा सकता है।



इन सबके कारण जब तक गैस पीड़ितों के शरीर में जहर है वे चाहे कितनी ही साँस क्यों न लें, उनका शरीर आक्सीजन का फायदा नहीं उठा सकता। जैसा कि अध्याय एक में कहा गया है, शायद ये तीनों गैसों कार्बाइड से निकलने वाली गैसों में थीं।

खून में आक्सीजन और कार्बन डाय आक्साइड की मात्रा को एक मंहगी मशीन 'खून गैस विश्लेषक' से मापा जा सकता है। वैज्ञानिकों ने कई गैस पीड़ितों के खून की जाँच की और पाया कि वह सामान्य खून से भिन्न था। एक दूसरी मशीन से हीमोग्लोबिन को मापा गया। गैस रिसन के दो महीने बाद भी गैस पीड़ितों के खून में हीमोग्लोबिन की मात्रा सामान्य से अधिक पायी गयी। यह आश्चर्यजनक है क्योंकि अक्सर गरिब लोगों को 'अनीमिया' (खून की कमी) की शिकायत होती है।

खून में सायनाइड जहर की मात्रा नापना कठिन है। पर यह जहर कटने के बाद सायनेट बनकर पेशाब



के साथ शरीर के बाहर निकलता है। तब 'स्पेक्ट्रोफोटोमीटर' से पेशाब में सायनेट की मात्रा मापी जा सकती है। इससे शरीर में सायनायड की उपस्थिति का पता चलता है।

सायनायड जहर की जानी मानी काट सोडियम थायोसल्फेट है। गैस रिसन के बाद थायोसल्फेट से इलाज की एक अजीब कहानी है। पूरा किस्सा 'थायोसल्फेट की लड़ाई' नामक पुस्तिका में छपा है। गैस पीड़ितों को सोडियम थायोसल्फेट इंजेक्शन दिलवाने में भी 'जन स्वास्थ्य केन्द्र' ने एक बड़ी भूमिका निभाई है। गैस पीड़ितों को आज भी यह इंजेक्शन दिया जा रहा है। यह दवा सायनायड जहर को काटकर उसे अहानिकारक थायोसायनेट में बदल देती है। थायोसायनेट पेशाब के साथ बाहर निकल आता है।

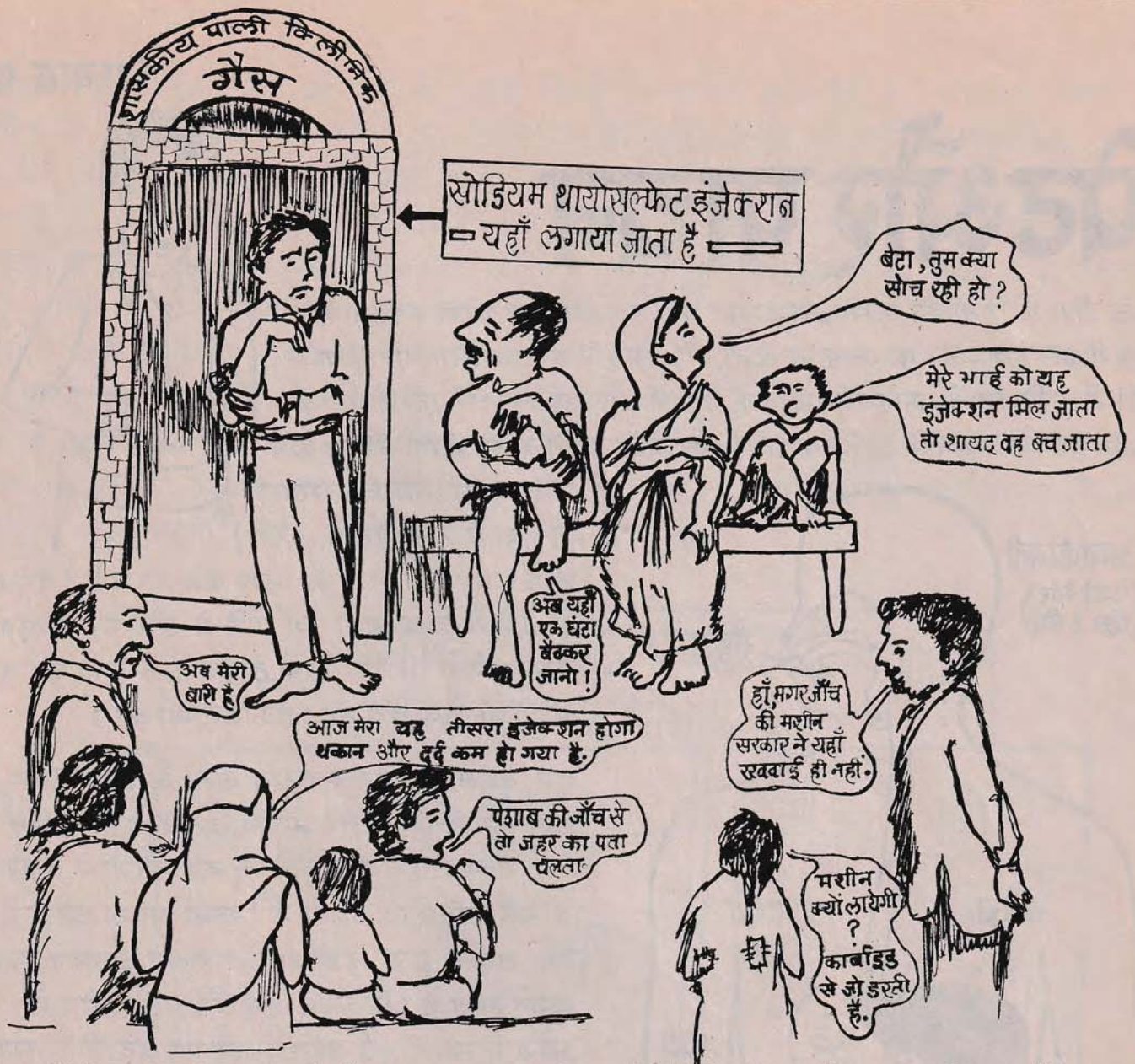
गैस पीड़ितों के शरीर में एक साल बाद भी सायनायड जहर क्यों मौजूद है? यह अभी तक वैज्ञानिकों के लिये एक पहेली है।

यूनियन कार्बाइड ने सायनायड के मामले को दबाने की पूरी कोशिश की है। इसका यह नतीजा रहा है बहुत से वैज्ञानिकों ने इसे गंभीरता से नहीं लिया है। भारतीय आयुर्विज्ञान शोध परिषद् (आई. सी. एम. आर.) एक मात्र ऐसी संस्था है जिसने मार्च 1985 में दी गई अपनी रिपोर्ट में बताया कि, कैसे सोडियम थायोसल्फेट से गैस पीड़ितों के खून में मिली गैसों सामान्य हो जाती हैं और पेशाब में थायोसायनेट की मात्रा बढ़ जाती है।

किसी और वैज्ञानिक संस्था ने इस विषय पर कोई रिपोर्ट नहीं दी।

पर यह पाया गया कि गैस पीड़ितों को सोडियम थायोसल्फेट से राहत मिलती है। यदि आप गैस पीड़ित हैं और आपको अभी भी सिरदर्द, घकान, साँस फूलना, पेट में गड़बड़, मौंस-पेशियों में दर्द आदि की तकलीफ है तो संभव है कि इस इंजेक्शन से लाभ हो। आप नजदीक के सरकारी अस्पताल या पॉली क्लिनिक में जाकर इसके बारे में पूछें। सरकार द्वारा ये इंजेक्शन मुफ्त दिये जाते हैं। भारत सरकार के विशेष आदेश पर भोपाल के लिये एक सरकारी दवा कम्पनी आई. डी. पी. एल. द्वारा यह इंजेक्शन बनाया जा रहा है।

इन इंजेक्शनों को पाने में यदि आपको कोई दिक्कत आती है तो आपको चीफ मेडिकल आफीसर, गैस राहत, बैरसिया रोड, भोपाल से शिकायत करनी चाहिए। आप जन स्वास्थ्य केन्द्र, भोपाल के



डाक्टरों के पास भी जा सकते हैं। जन स्वास्थ्य केन्द्र के कैंची छोटा स्थित क्लीनिक में कुछ मरीजों को ये इंजेक्शन दिये जा रहे हैं। अन्य गैर सरकारी स्वयं सेवी स्वास्थ्य राहत संस्थान भी सरकार से इन इन्जेक्शनों की सप्लाई लेने की हकदार हैं। और जनता यह मांग करे तो उन्हें इस काम के लिये तैयार भी किया जा सकता है।

**अच्छी सेहत का हक हमारे जीने के हक से जुड़ा है।  
सेहत की लड़ाई हक की लड़ाई है।**

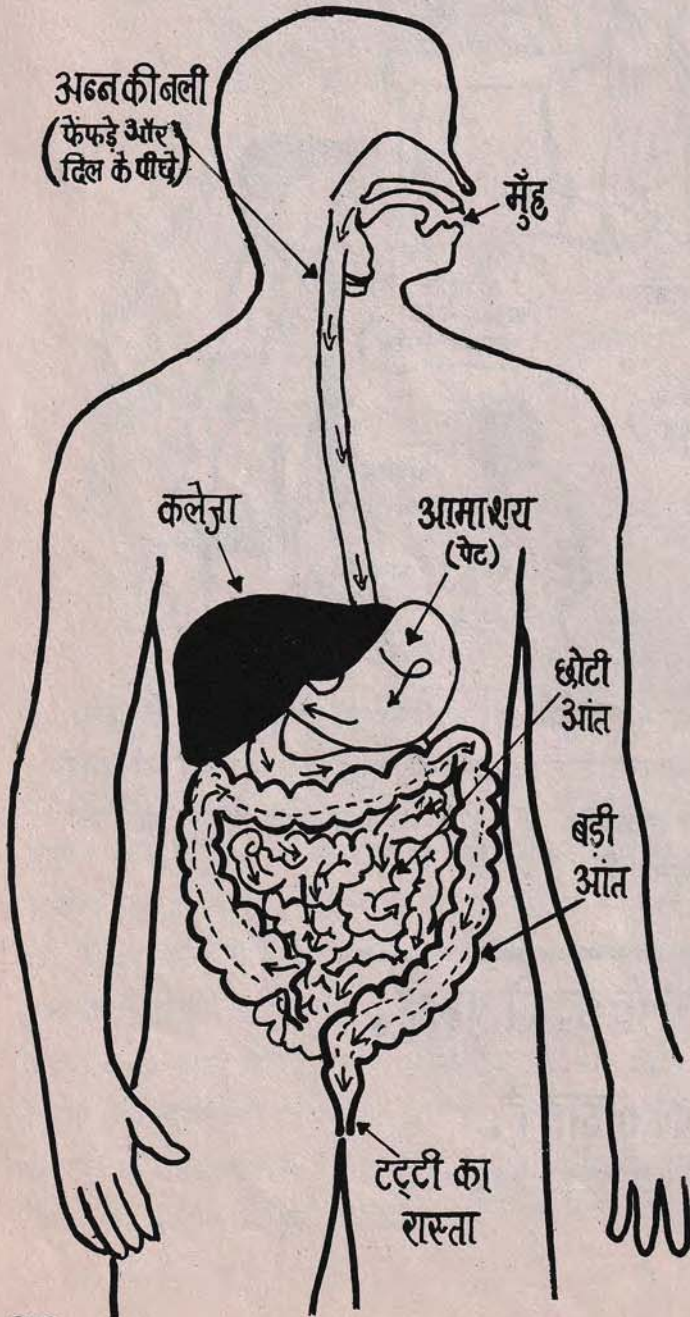
# पेट और पाचन

कुछ गैस पीड़ितों को सबसे ज्यादा पेट की तकलीफों ने परेशान किया है। शुरू में उल्टी व टट्टी पर काबू न होना और बाद में दस्त बहुत आम शिकायत थी। गैस रिसन के महिनो बाद तक पेट में गड़बड़ लगती रही और थोड़ी सी उतेजना से भितली आने लगती। कुछ बीड़ी बनाने वाली औरतों को यह काम



छोड़ना पड़ा। क्योंकि तम्बाखू की गंध से उन्हें भितली आती थी। ज्यादातर लोगों की भूख कम हो गयी। वे एकदो रोटी से ज्यादा नहीं खा पाते थे और पेट में गड़बड़ लगने लगती थी। पेट भारी होकर फूल जाता था। कुछ लोगों ने पेट दर्द की शिकायत भी की।

जून, 85 में जब जन स्वास्थ्य केन्द्र के डॉक्टरों ने काम शुरू किया तो एक अजीब बात देखी। सोडियम थायो सल्फेट इन्जेक्शन लेने के बाद लोगों ने बताया कि उन्हें अब भूख लगती है। खाना अच्छा लगता है और सरकार द्वारा दिया जा रहा राशन अचानक कम लगने लगा है। सितम्बर 85 तक मरीज पेट के उपरी हिस्से में दर्द और दबाने पर दर्द की शिकायत कर रहे थे। सोडियम थायो सल्फेट देने से यह परेशानी भी दूर हुई। इन सब बातों के कारण अभी पूरी तरह नहीं समझे जा सके हैं। शुरू के पोस्टमार्टमों में पेट के अन्दर की झिल्ली असामान्य रूप से लाल व सूजी हुई पायी गयी थी। ऐसा ही दुर्घटना के महीने भर बाद मरे लोगों में भी पाया गया। इससे ऐसा लगता है कि सोडियम थायो सल्फेट पाचन तंत्र में पहुँचे जहर को भी काटता है। और इसलिये सोडियम थायो सल्फेट से इलाज के बाद पाचन तंत्र ठीक से काम करने लगता है।



आमतौर पर जिन लोगों को पेट के ऊपरी हिस्से में जलन वाला दर्द है (जैसा कि हमने चित्र में दिखाया है) और थोड़ा-सा खाने पर ही अजीब तरह का भारीपन लगता है, उन्हें 'अति अम्लीयता' सता रही है। इन लोगों को अम्लनाशक या एन्टासिड नामक दवाइयाँ दी जाती हैं। यदि दर्द ज्यादा है तो उनके पेट व आँत को आराम देने के लिये कुछ और दवाइयाँ दी जाती हैं जिन्हें रेंटन विरोधी या एन्टीस्पास्मोडिक कहा जाता है। डॉक्टरों ने मरीजों को ढेर सारी अम्लनाशक व रेंटन विरोधी दवाइयाँ दी हैं जिनसे मरीजों को कुछ वक्त के लिये थोड़ी राहत मिली है। परन्तु चूँकि उनके पीछे कारण काफी गहरे हैं इसलिये इन दवाइयों से बीमारी ठीक नहीं हुई। यदि आपको सोडियम थायोसल्फेट लेने के बाद भी पेट में तकलीफ है तो आपको इन दवाओं से राहत मिलेगी। कोई भी चीज जो उत्तेजक है आपके पेट में अम्लीयता बढ़ा सकती है। इसलिये अच्छा होगा कि आप कड़क चाय, काफी, मिर्ची, तम्बारू आदि से परहेज करें।



महिला : इतनी महंगी दवा !

पुरुष : हाँ, पर डॉक्टर ने तुम्हें तीन गोली रोज खाने के लिए कहा है।

महिला : पर इसके लिए हमें मकान किराया, किराने दूध और सब्जी का खर्च बंद करना होगा।

# प्रजननअंग

स्त्रियों के  
हालात कितने  
खराब हैं

जीजी, हिम्मत मत हारना!  
मैं यहाँ फौरन डॉक्टर  
को ला रही हूँ।



कई महिलाओं को गैस रिसन के बाद प्रजनन तंत्र से संबंधित दिक्कतों का सामना करना पड़ा। हमेशा की तरह डॉक्टरों द्वारा महिलाओं की समस्याओं की तरफ ध्यान नहीं दिया गया। आज तक भारतीय चिकित्सा अनुसंधान परिषद् या अन्य किसी संस्था द्वारा माह्वारि की अनियमितता, योनि से बहुत ज्यादा सफेद पानी आना, सैकड़ों महिलाओं द्वारा बतायी गयी दूध की कमी आदि पर एक भी रपट नहीं दी गयी है। गर्भपात, मृत शिशु जन्म, जन्म के तत्काल बाद मौतें और गैस रिसन के बाद पैदा हुये बच्चों में विकृतियाँ अवश्य सनसनी-खेज खबरों का विषय रहे हैं। इनमें से कुछ खबरें सही भी नहीं थीं। ज्यादातर महिलाओं की प्रजनन से जुड़ी समस्याओं को घर ही घर में चुपचाप निपटा दिया जाता है। इसलिये ये कभी ठीक तरह से रिकार्ड में नहीं आ पातीं।

## 7.1 महिलाओं के रोग

हालांकि सरकार ने इस ओर कोई ध्यान नहीं दिया, लेकिन कुछ मेडिकल स्वयंसेवी संस्थाएं व महिला संस्थाओं ने जो कुछ हुआ है उसके बारे में जानने के प्रयत्न किये हैं।

इन सभी संस्थाओं द्वारा किये गये अध्ययन में गैस रिसन द्वारा महिलाओं के रोगों संबंधी नीचे लिखी शिकायतें पायी गयीं।

1. गैस रिसन के तुरंत बाद के महिलाओं में गैस प्रभावित अधिकांश महिलाओं की योनि से बहुत ज्यादा सफेद पानी निकल रहा था। यह विशेष रूप से गाढ़ा पीलापन लिये सफेद था, और इसमें कोई दुर्गंध नहीं थी और न ही किसी तरह की जलन या खुजली थी। यह सामान्य तौर पर छूत के रोगों के कारण निकलने वाले सफेद पानी से बिल्कुल अलग था।

2. कई गैस प्रभावित महिलाओं को पहले तीन माह तक माहवारी के समय बहुत अधिक खून आ रहा था। तुलना समूह वाले इलाके सुदामानगर में केवल

गर्भाशय या बच्चेदानी

सामने की तरफ

पेशाब की थैली

हड्डी

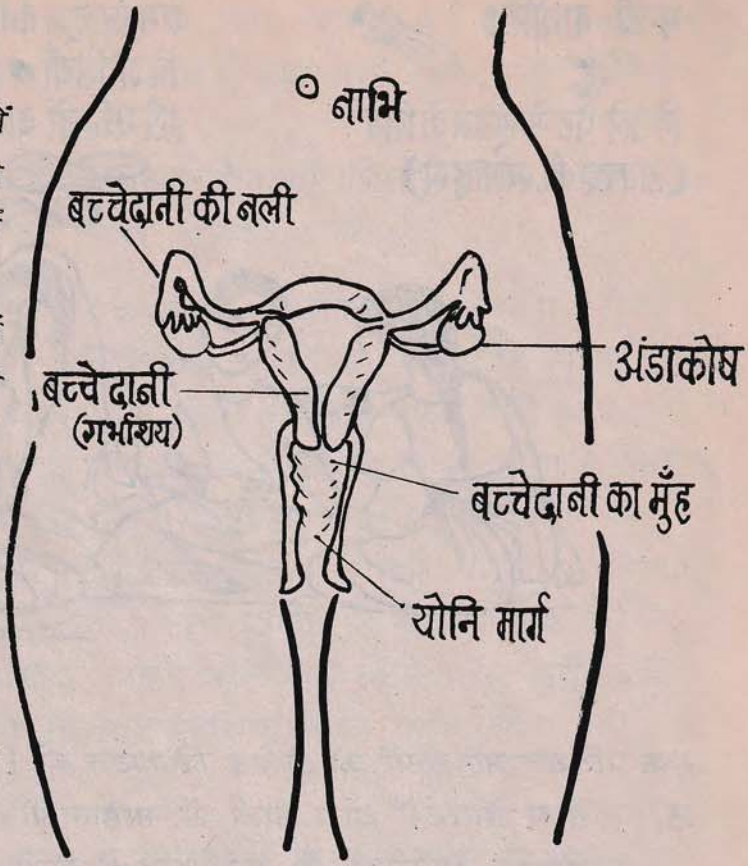
पेशाब का रास्ता

योनि मार्ग

टट्टी का रास्ता

रीढ़ व पूंछ की हड्डियाँ

पीछे की तरफ



पन्टी-बायोटिक  
  
 निचले पेट में सूजन के लिये  
 (डाक्टर की सलाह से)

कमजोर खून के लिये आयरन  
 की गोलियाँ ●●● और  
 हरी पत्तियों वाली सब्जियाँ  


एस्प्रीन की गोलियाँ  
 ●● सिर्फ दो.  
 माहवारी के दर्द के  
 लिये



बट्टेदानी के मुँह पर धाले  
 के लिये (और उस के कारण  
 धात ज्यादा जाना) ...  
 "नीली दवाई" (इंजेक्शन)



एक प्रतिशत महिलाओं को ही यह शिकायत थी ।

3. महिला डॉक्टरों द्वारा मार्च में महिलाओं के गर्भाशय की जाँच करने पर पाया गया कि अधिकांश महिलाओं के गर्भाशय के दोनों ओर (ऊपर व नीचे) सूजन आ गयी थी। सुदामा नगर में जाँच करने पर पाया गया कि वहाँ यह शिकायत बहुत कम महिलाओं को थी ।
4. अधिकांश महिलाओं के गर्भाशयों के मुँह पर धाले पाये गये। तुलना समूह सुदामा नगर में यह शिकायत बहुत कम में पायी गयी।

इन्हीं महिला डॉक्टरों ने सितम्बर 85 में फिर से क्लीनिक में औरतों की जाँच की व पाया कि ये शिकायतें धीरे-धीरे कम हो रही हैं।

हमने इस भाग को और अच्छी तरह से समझाने के लिये चित्र 7.2 और 7.3 में महिलाओं के प्रजनन अंग दिखाये हैं।

## 7.2 क्या समस्याएँ अभी हैं?

यदि आप महिला हैं और आपको अभी भी कुछ तकलीफें हैं, जैसे योनि से बहुत ज्यादा सफेद पानी आना, माहवारी में तकलीफ, निचले पेट में या पीठ में दर्द, पेशाब में जलन, खुजली और छाले पड़ना या इसी तरह की कोई खास शिकायत, या कोशिश करने पर बच्चे नहीं होना आदि। तो आप डॉक्टर को दिखायें और पूरी जाँच करवायें। तकलीफों का कारण जहरीली गैस न भी हो तो भी यह जाँच महत्वपूर्ण है।

यदि गर्भाशय पर सूजन हो तो डॉक्टर पन्टी बायोटिक दवायें देंगे और एक हफ्ते बाद फिर जाँच करके देखेंगे कि सूजन कम हुयी है या नहीं।

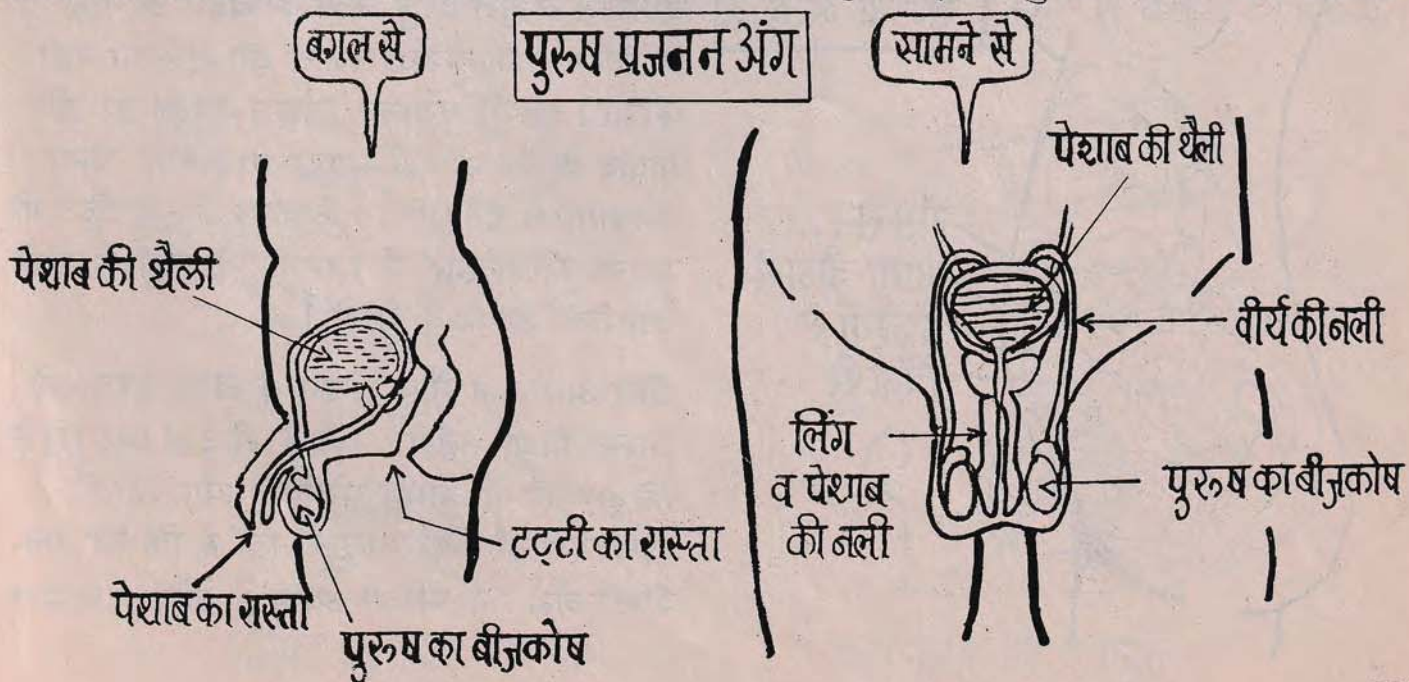
यदि आपको माहवारी में दर्द होता है तो 'एस्प्रिन' नाम की एक सस्ती गोली लेने से दर्द कम हो जायेगा। यह वही गोली है जिसे सिरदर्द होने पर लेते हैं। यदि एस्प्रिन से दर्द कम नहीं होता है तो डॉक्टर को दिखायें।

यदि माहवारी में बहुत खून निकलता है तो सरल और सस्ती गोलियाँ, जिन्हें 'फेरस सल्फेट' कहते हैं, लेनी चाहिये जिससे आपके शरीर में खून बनने में मदद होगी।

यदि योनि से बहुत ज्यादा सफेद पानी आने की शिकायत है तो डॉक्टर से अंदरूनी जाँच करवाना चाहिये। यह भी याद रखें कि थोड़ा बहुत सफेद पानी जाना आम बात है। थोड़ा बहुत ध्यान रखें तो पायेंगी कि एक माहवारी चक्र के बीच कुछ दिनों तक यह सफेद पानी अलग किस्म और अलग मात्रा में होता है। यह महिला के उपजाऊ दिनों की वज़ह से होता है यानी इन दिनों यदि संभोग किया जाये तो गर्भाधान की निश्चितता बढ़ती है। कुछ औरतों ने इन दिनों में संभोग न कर प्राकृतिक परिवार नियोजन का यह तरीका भी सीख लिया है। सफेद पानी में बदबू हो या जिससे जलन या खुजली हो या छाले पड़ गये हों, तब इलाज की जरूरत रहती है। 'जेंशन वायलेट' नाम का एक मरहम गर्भाशय के मुँह पर हुये छालों पर लगाने के लिये आता है। छालों की वजह से ही बहुत अधिक सफेद पानी आने की शिकायत होती है।

आपको पति से माँग करनी चाहिये कि वे आपकी स्वास्थ्य समस्याओं के प्रति उतने ही संवेदनशील हों जितनी कि आप उनके प्रति हैं। यदि आपको संभोग के समय दर्द होता है तो उन्हें कहें कि वे इसके लिये जोर न दें। ऐसी समस्या के बारे में किसी महिला स्वास्थ्य कार्यकर्ता से सलाह लें।

कुछ गैस प्रभावित महिलाओं ने फरवरी 85 में महिला डॉक्टरों को बताया था कि गैस रिसन के बाद उनके पति कमजोरी के कारण संभोग करने में असमर्थ रहते हैं। कई पुरुषों ने भी 'जन स्वास्थ्य



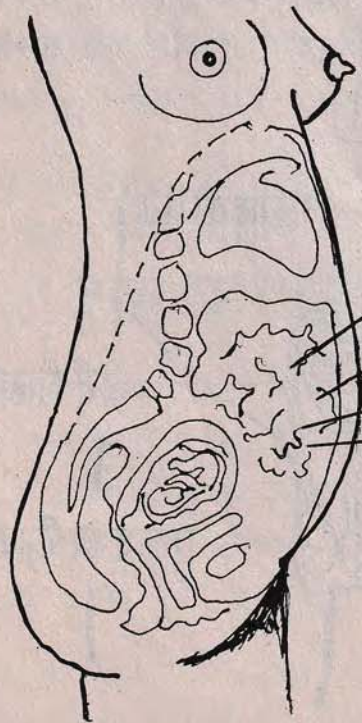
केन्द्र' के डॉक्टरों और स्वास्थ्य कार्यकर्ताओं को इस समस्या के बारे में बताया है। यह संभव है कि गैस रिसन के कुछ दिनों बाद तक ऐसा गैस के असर के कारण हुआ हो पर अब यह उसके कारण नहीं लगता। बहरहाल, यदि ऐसी कोई समस्या है तो डॉक्टर या स्वास्थ्य कार्यकर्ता से संपर्क करें। कभी-कभार इस डेग की दिक्कत सभी पुरुषों को आती है परन्तु यह समस्या तभी बनती है जब इसकी बहुत चिंता की जाये। शारीरिक संबंध बहुत कुछ मूड और दिमागी हालत पर निर्भर करते हैं। याने इसका मतलब नहीं कि आप मर्द नहीं हैं। इस दिक्कत को नामर्दी का नाम भी नहीं देना चाहिये।

## 7.3 गर्भाशय व गर्भधारण

गर्भ पर जहरीली गैस का असर और खासकर गर्भ में बढ़ रहे बच्चों पर असर सबसे ज्यादा चिंता और विवाद का विषय रहा है। गर्भपात व मृत शिशु जन्म की संख्या में बढ़ोतरी हुई है, इस बात को मानने में सरकार को बहुत समय लगा। किंतु कुछ स्वतंत्र सर्वेक्षणों व महिला डॉक्टरों, दाइयों, गैस पीड़ितों के बयान और इमशान के रिकार्ड शुरू से ही इससे ठीक उल्टी बात बताते हैं।

मेडिको फ्रेंड सर्कल द्वारा की गई पहली छानबीन (फरवरी 1985) के समय कई सरकारी और प्रायवेट डाक्टरों ने आंतरिक गर्भपात की बात बतायी। आंतरिक गर्भपात का मतलब है कि शिशु गर्भ में मर गया और मृत अवस्था में माँ के गर्भ में ही रहा। इससे यह समझ में आया कि भ्रूण (बढ़ता हुआ शिशु) को नुकसान अथवा मौत तो जहरीली गैस के संपर्क में आने पर ही हो गयी थी परन्तु गर्भ गिरा कुछ समय बाद ही। किन्तु अब तक किसी रपट में इस

अनुमान का वैज्ञानिक प्रमाण नहीं छपा है।



महिलाओं के पेट में  
भ्रूण पर असर...

गैस से ...  
भागा-दौड़ी से ...  
दवाईयों से ...  
चिंता से ...

गर्भपात व मृत शिशु जन्म दर बढ़ने के पीछे शारीरिक व मानसिक तनाव की भूमिका रही होगी। इतनी भयानक उथल-पुथल उर और विषाद के दौर में इस प्रकार के तनाव होना स्वाभाविक है। यूनियन कार्बीइड इसके लिये भी उतनी जिम्मेदार है जितनी कि गैस के सीधे जहरीले असर के लिये।

जिन औरतों ने गैस रिसन के बाद बच्चों को जन्म दिया उनमें से कई ने इस बार पहले की जचकी से ज्यादा परेशानी और दर्द की शिकायत की। यह मादूम नहीं है कि यह जहरीली गैस का सीधा असर है और यदि ऐसा

है तो क्या ?

## 7.4 दूध आना

गैस रिसन के समय जो माँयें बच्चों को दूध पिलाने की अवस्था में थीं उनमें से अधिकांश ने दूध की कमी हो जाने की शिकायत की है। यहाँ तक कि सरकारी सूत्रों के अनुसार गाय व भैंसों का दूध भी बहुत कम हो गया है। औरतों के मामले में दूध को नापना वैसे ही मुश्किल है और इस तरफ अधिकारियों ने ध्यान भी नहीं दिया। इस कारण से कुछ भी साबित कर पाना कठिन है। परंतु हमने कई बहुत कमजोर बच्चों को देखा जिन्हें हमारे पास दस्त के कारण लाया गया था। बोतल से दूध पिलाने के कारण भी ऐसा हुआ था।

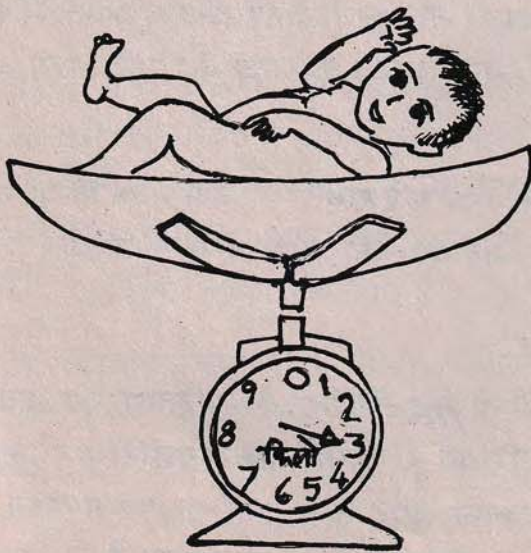


दूध  
की  
कमी

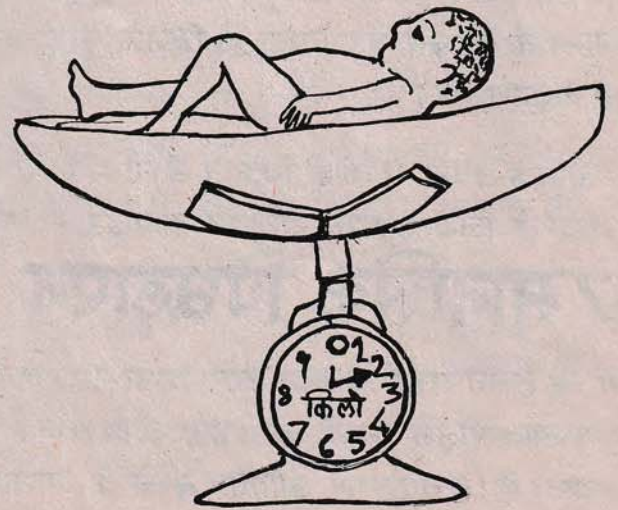
## 7.5 नवजात शिशु

कई माँओं ने हमें बताया कि जन्म के समय उनके बच्चों की हथेलियाँ और एड़ियों की चमड़ी खिरी रही थी और शरीर के दूसरे हिस्से पर फफोले थे। ऐसे कुछ मामले हमने खुद देखे। उन्होंने यह भी बताया कि बच्चों का रंग हरा-सा था जो कि करीब एक महीने तक रहा। इस बात की पुष्टि हम खुद देखकर नहीं कर पाये हैं।

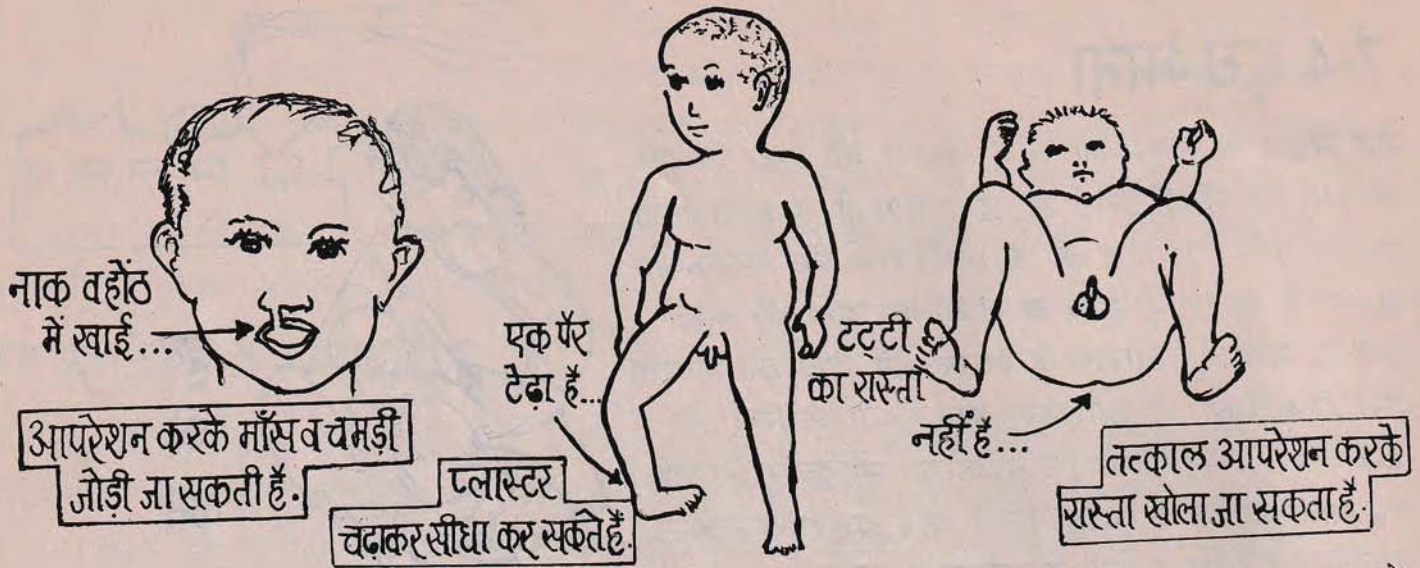
आमतौर पर यह बताया गया कि अभी जन्मे बच्चे अपने बड़े भाई-बहनों के जन्म के समय के आकार की तुलना में छोटे थे। जैसा कि हाल की सरकारी रपट में बताया गया है कि



औसत वजन का स्वस्थ  
बच्चा



कम वजन का कमजोर  
बच्चा



जैसे प्रभावित इलाकों में जन्म के एक महीने के अंदर नवजात शिशुओं की मृत्यु दर सामान्य से अधिक बढ़ गई है।

## 7.6 बच्चों की विकृतियाँ

हाल ही में सरकारी रपट में कहा गया है कि नवजात शिशुओं में 3 से 4 प्रतिशत विकृतियाँ आयीं हैं। यह सामान्य से लगभग दुगुनी है पर आशंका इससे भी ज्यादा की है। किन्तु दुर्भाग्य से कई बार शव परीक्षा ही नहीं की गई और कई बार डॉक्टर नहीं थे, जिससे यह पता लगे कि जहरीली गैस से कितनी और किस तरह से विकृतियाँ पैदा हुईं।

हमने पाया कि सबसे अधिक मामले दिमाग न बनने (जिसे एनेन सिफेली कहते हैं) और शिद की हड्डियों में दरार रह जाने (जिसे स्पायना बिफिडा कहते हैं) के थे। पहले वाली विकृति में खोपड़ी भी नहीं बनती और दूसरी वाली में शिद की हड्डी में होने वाली तंत्रिकाएँ बाहर निकल आती हैं। कुछ ऐसे मामलों का भी पता चला है जिनमें शिद की हड्डी की विकृति के साथ बंद गुदा नली और पैरों में भी विकृति थी।

यदि आपके बच्चे में कोई विकृति है तो संभावना है कि आपरेशन से इसे ठीक किया जा सके। ऐसे बच्चे के लिये आपको यूनिजन कार्बाइड से आजीवन सहायता की माँग करना चाहिये।

## 7.7 मानसिक पिछड़ापन

जैसा कि हमने पहले बताया था कि हो सकता है कि माँ के पेट में शिशु के मस्तिष्क को आवश्यकता से कम आक्सीजन मिली हो। इस आक्सीजन की कमी का एक परिणाम मानसिक पिछड़ापन हो सकता है। बचपन में आपके बच्चे के मानसिक विकास और झमताओं का नापना बहुत आसानी से हो सकता है। यदि आपको चिंता है कि आपका बच्चा मानसिक रूप से पिछड़ा है तो आप नजदीक के सरकारी पौली क्लिनिक के बच्चों के डॉक्टर के पास जायें। जो बच्चे गैस रिसन के कारण

मानसिक रूप से पिछड़ गये हैं उन्हें यूनियन कार्बाइड व सरकार से आजीवन सहायता मिलनी चाहिये। उनके माँ-बाप को इसकी माँग करना चाहिये

## 7-8 भविष्य में गर्भधारण

वे सारे शिशु जो गैस रिसन के समय गर्भ में थे सितम्बर के अन्त तक जन्म ले चुके हैं। उसके बाद गैस प्रभावित इंपक्तियों के जो बच्चे होंगे वे गैस रिसन के बाद के गर्भ धारण से होंगे।

आज हम यह कहने की स्थिति में नहीं हैं कि आपके अजन्मे बच्चों या बच्चों के बच्चों में गैस के प्रभाव से कोई नुकसान होगा या नहीं। सरकार को चाहिये कि वह आने वाली दो पीढ़ियों तक लगातार जाँच करती रहे कि कोई नई बात तो नहीं हो रही है।



यदि आप अभी बच्चा नहीं चाहते हैं तो इसके लिये सबसे अच्छा तरीका यही होगा कि पुरुष निरोध का इस्तेमाल करें। आपके स्वास्थ्य को देखते हुये गर्भ रोकने वाली हारमोन गोलियाँ या इन्जेक्शनों का उपयोग न करें। आप देखती रहें कि आपके पति निरोध का बराबर इस्तेमाल कर रहे हैं या नहीं।

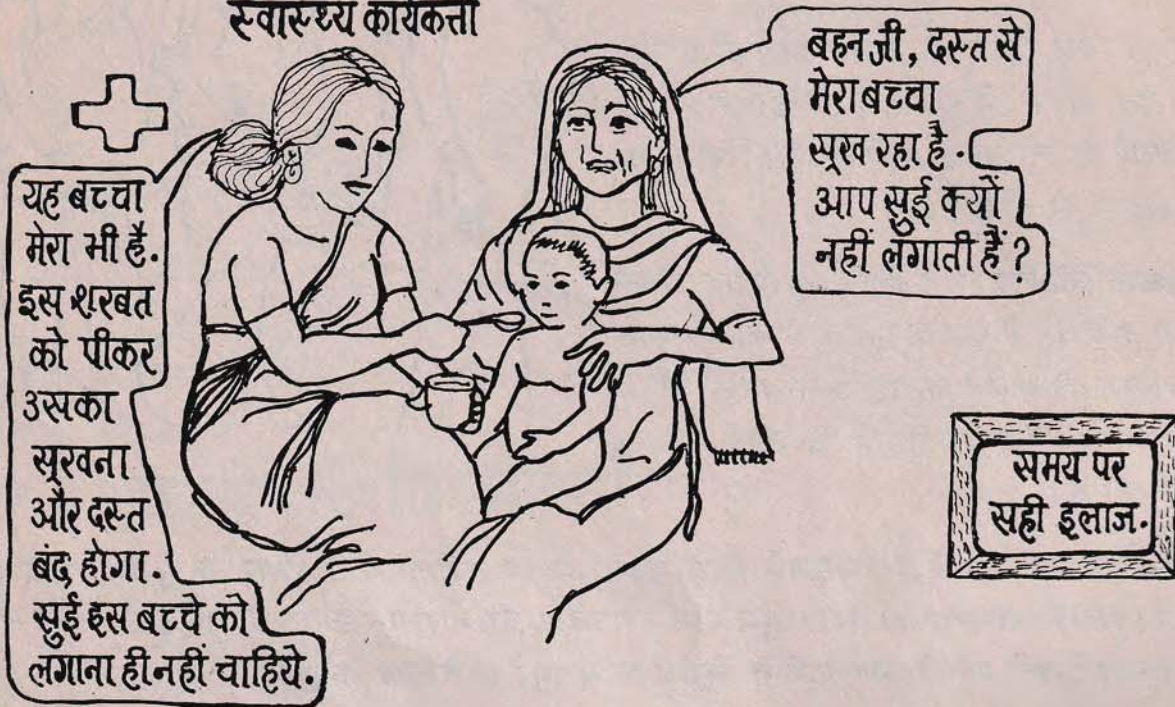
आपको प्राकृतिक परिवार नियोजन के लिये र्यूकस वाला तरीका भी सीखना चाहिये जिससे आप अनचाहे गर्भ से बच सकें। इन तरीकों से आपको पता चल जायेगा कि महिने के किन दिनों में आपको संभोग नहीं करना चाहिये। यदि आप सचमुच भविष्य में कोई बच्चा नहीं चाहते हैं तो पति या पत्नी अपना आपरेशन भी करवा सकते हैं।

गैस रिसन से कुछ लोगों के छोटे बच्चे मर गये हैं और वे फिर से बच्चा चाहते हैं लेकिन उन्होंने आपरेशन भी करवा लिया था। वे लोग अपना आपरेशन उलटवा सकते हैं। कई लोग अपना आपरेशन उलटवा भी चुके हैं। इसमें कुछ हद तक सफलता मिल सकती है। अपने स्वास्थ्य कार्यकर्ता से इस बारे में जानकारी प्राप्त करें। आपरेशन के दौरान और तुरन्त बाद में आपको विशेष देखभाल की जरूरत रहेगी। आपरेशन मुफ्त में होगा।

यदि आपको पता चलता है कि आप गर्भवती हैं तो हम चाहेंगे कि आप अपनी दैनिक देखभाल के लिये आवश्यक सलाह लें। ये सलाह सभी गैस प्रभावित गर्भवती महिलाओं के लिये है। सरकार ने इसके लिये विशेष केन्द्र स्थापित किये हैं। ऐसे और भी केन्द्रों की जरूरत है, जो और भी अधिक और बेहतर सुविधाएँ मुहैया करा सकें।

# बच्चों का स्वास्थ्य

स्वास्थ्य कार्यकर्ता



यह बच्चा मेरा भी है। इस शरबत को पीकर उसका सूखना और दस्त बंद होगा। सुई इस बच्चे को लगाना ही नहीं चाहिये।

बहन जी, दस्त से मेरा बच्चा सूख रहा है। आप सुई क्यों नहीं लगाती हैं?

समय पर सही इलाज.

बड़ों के मुकाबले बच्चों का शरीर मुलायम और नाजुक है। इसलिये उन पर गैस का ज्यादा असर हुआ है। उनमें से कुछ तो इस नुकसान के बोझ को जिंदगी भर उठायेंगे। कुछ बच्चों में हो सकता है कि यह उम्र के साथ बढ़ता जाये। उन्हें स्वास्थ्य की सही देखभाल और सही सलाह मिलना जरूरी है। इसके साथ-साथ इन बच्चों के स्वास्थ्य की प्रगति और किसी भी गड़बड़ी का लेरवाजोश्वा रखना होगा। इसी के आधार पर इनके लिये जो विशेष साधन जुटाने होंगे उनका हर्जाना यूनियन कार्बाइड से वसूल किया जा सकेगा। यह सरकार की नैतिक जिम्मेदारी है कि गैस प्रभावित इलाके के बच्चों के स्वास्थ्य की सही देखभाल हो।

## 8.1 बीमारी में चिकित्सा

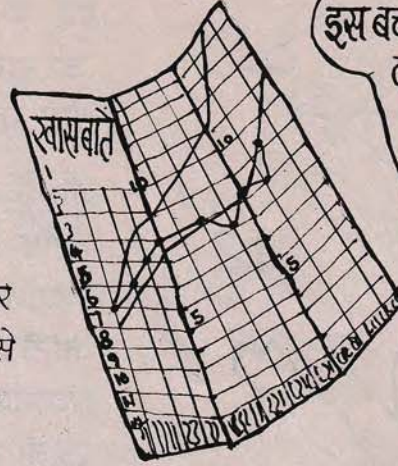
बच्चों की खास देखभाल के लिये सरकार को चाहिये कि वह गैस प्रभावित इलाकों में पर्याप्त डॉक्टर व स्वास्थ्य कार्यकर्ता मुहैया कराये। कमजोर हो गये बच्चों (जिन्हें ज्यादा खतरा है) को खोजने में स्वास्थ्य कार्यकर्ताओं को डॉक्टर की मदद करना चाहिये। बार-बार डाक्टर और स्वास्थ्य केन्द्र बदलना ठीक नहीं। बल्कि एक ही केन्द्र पर रहें। इससे आपके बच्चे की सबसे अच्छी स्वास्थ्य सुविधा मिल सकेगी।

## ४.२ नियमित जाँच व वजन

डॉक्टर या स्वास्थ्य कार्यकर्ता द्वारा आपके बच्चे की नियमित जाँच हर महीने होनी चाहिए। जाँच का एक महत्वपूर्ण हिस्सा बच्चे का वजन लेना होगा। जन्म से पाँच साल तक यह नियम से होना चाहिये। इससे आप जान सकेंगे कि बच्चे का वजन उसकी उम्र के मुताबिक है या नहीं। इसी स्वास्थ्य कार्ड पर स्वास्थ्य कार्यकर्ता और भी बातें लिखेंगे, जैसे बच्चे को कोई बीमारी या कमजोरी या उसे टीका देने की तारीख आदि। इस स्वास्थ्य कार्ड की नकल आपके पास भी रहनी चाहिये।

एक स्वास्थ्य कार्यकर्ता घर-घर जाकर बच्चों का वजन ले सकता है। सरकार से यह सुविधा मांगना आपका हक है।

यदि जाँच के दौरान यह पता चलता है कि बच्चा ठीक से बढ़ नहीं रहा है तो आपको पास के सरकारी स्वास्थ्य केन्द्र पर जाना चाहिये, इसे टालें नहीं। न बढ़ने के कारणों का जल्दी पता लगा लेना बेहतर होता है। इसके कई कारण हो सकते हैं। जैसे आवश्यक भोजन न मिलना, जब-तब दस्त लगना, कीड़े, कान बहना, चमड़ी पर रोग या टी.बी. आदि। ऐसा भी हो सकता है कि आपके बच्चे के फेफड़े गैस के कारण कमजोर हो गये हों या बच्चे में रोग से लड़ने की ताकत कम बची हो।



इस बच्चे का वजन क्यों नहीं बढ़ रहा?



## ४.३ टीके

टीके देने से बच्चे की कुछ खास छूत की बीमारियों से लड़ने की ताकत बढ़ाई जा सकती है। यह इसलिये भी जरूरी है क्योंकि भिक ने शरीर की आत्मरक्षा प्रणाली को कमजोर कर दिया है। टीके इन्जेक्शन से भी दिये जाते हैं, और पिलाये भी जाते हैं। टी.बी., कुकर खौंसी, डिप्थीरिया, टिटेनस, पोलियो और खसरा (मिजल्स) के टीके होते हैं। कुकर खौंसी डिप्थीरिया और टिटेनस का एक ही मिला-जुला टीका होता है, जिसे 'तिहरा टीका' कहते हैं। ध्यान रखें कि आपके बच्चे को सही समय



पर टीका लगे। टीकों के लगाने के सही समय की जानकारी आगे दी है।

भौपाल में पाँच वजे तक के सभी बच्चों को टीका लगाना चाहिए। यदि किसी बच्चे को समय पर टीका नहीं लगा है तो देर होने पर भी उसे टीका अवश्य लगवायें।

जो बच्चा कमजोर है या जिसका परिवार बहुत गरीब है उसके लिये खसरा रोग के परिकारम भयानक हो सकते हैं। इससे भूख कम हो जाती है और बच्चे की अन्य बीमारियों के खिलाफ अपना बचाव करने की ताकत जाती रहती है। ऐसा बच्चा खांसी, निमोनिया, दस्त, कान बहने और चमड़ी रोग पैदा करने वाले कीटाणुओं के खिलाफ ठीक से नहीं जूझ पाता। इसलिये रोग होने के बाद बच्चा अक्सर बीमार रहता है। बार-बार उसे छूत की बीमारियां होती हैं और धीरे-धीरे कमजोर

होता चला जाता है। वह काफी भोजन नहीं खा पाता और छूत की बीमारियों से जूझ नहीं पाता। इस प्रकार वह कुपोषण और छूत की बीमारियों के ऐसे दुष्चक्र में फँस जाता है जिससे उसे बचा पाना एक अच्छे डाक्टर के लिये भी संभव नहीं होता। यह दुष्चक्र बच्चे की मौत में बदल सकता है।

## टीका लगाने का समय चक्र

कौन सा टीका ?	किस बीमारी के खिलाफ	टीका कब दिया जाये
बी. सी. जी. टीका	टी. बी.	जन्म के समय एक ही बार।
तिहरा टीका (इन्जेक्शन)	कुकर खांसी, डिप्थीरिया	जन्म के तीसरे, चौथे व पाँचवें
पोलियो	टिटनेस	महिने। तीन खुराक।
(पिलाने की दवाई)	पोलियो	चौथे महिने से शुरू करके हर
खसरा टीका	खसरा	महिने एक बार, पाँच खुराक
(इन्जेक्शन)		नौवें महिने के बाद जितनी
		जल्दी हो सके, एक खुराक।

नोट: कोई टीका समय पर न लगाने पर भी कोई हर्ज नहीं। बाद में भी लग सकता है।

पर टीका लगवायें जरूर।

एक तरह से खसरा भारत व अन्य गरीब देशों में नम्बर एक की जानलेवा बीमारी है। इसलिये खासकर भोपाल में यह बहुत जरूरी है कि पाँच वर्ष तक के सभी बच्चों को खसरा का टीका दिया जाये। यह बहुत सस्ता टीका है और इसका कोई खराब असर नहीं होता है। इसे सरकार की उच्च प्राथमिकता देकर मुहैया करवाना चाहिये।

भोपाल के बच्चों के लिये "खसरा" का टीका बहुत जरूरी है।

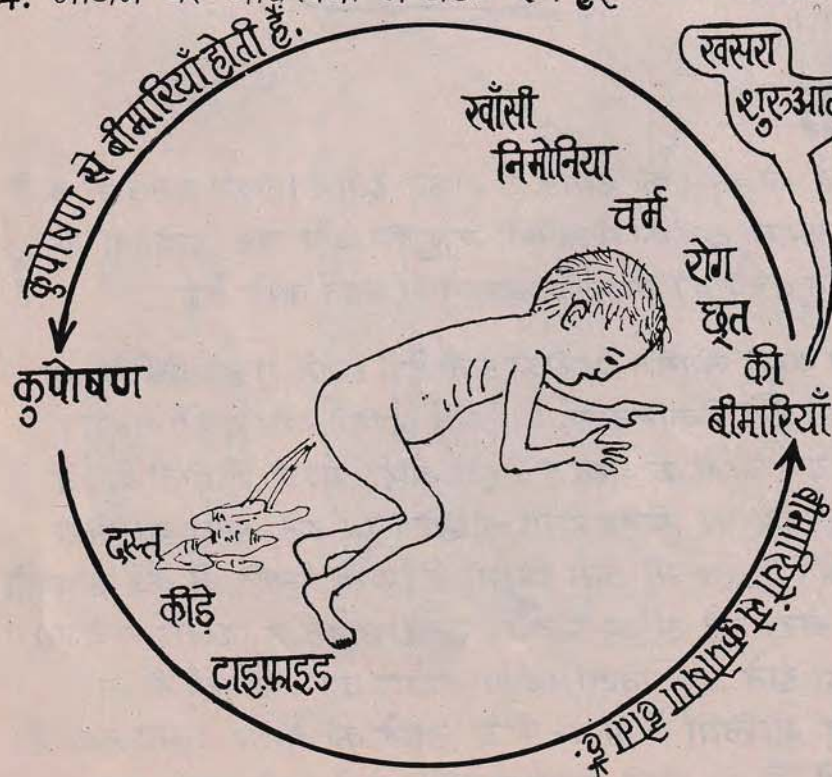


## 8.4 सफाई क्यों और कैसे?

अगर हम सफाई के कुछ आसान नियमों का पालन करें तो दस्त, कीड़े और चमड़ी के रोगों जैसी छूत की बीमारियाँ कम होंगी। नीचे दी गई बातों पर खुद अमल करें व बच्चों को भी सिखायें:

1. टूट्टी के बाद और भोजन के पहले अपने हाथों को साबुन व पानी से धोयें। साबुन के बदले राव का इस्तेमाल किया जा सकता है।
2. हफ्ते में एक बार नाखून अवश्य काटें। नाखूनों में जमा मैल दस्त या पेट में कीड़े पैदा कर सकता है।
3. शौचालय का उपयोग करें। यदि आप खुले में टूट्टी करते हैं तो मक्खियाँ या अन्य जानवर, कीटाणु फैला सकते हैं।
4. भोजन पर मक्खियाँ न बैठने दें। हर संभव तरीके से मक्खियों को दूर रखें।

5. रोज साबुन लगाकर नहायें। इससे चमड़ी के रोगों से बचाव होगा।



इन नियमों पर अमल के लिये सरकार को काफी कुछ करना होगा। सरकार को चाहिये कि वह ज्यादा पानी मुहैया करे। नालियों की बेहतर व्यवस्था करे और बस्तियों में साफ सुथरे शौचालयों का काफी संख्या में निर्माण करे। आपको संगठित होकर माँग करना चाहिये कि आपकी बस्ती में लोग स्वस्थ रह सकें। यह सरकार का फर्ज है। सफाई की ये आदतें बच्चे तभी सीखेंगे जब माँ-बाप उन्हें खुद करें। इससे उन्हें भी फायदा होगा क्योंकि उन्हें बीमार बच्चे को लेकर जगह-जगह

हमारी जरूरतों के हिसाब से क्या इस बस्ती में साफ पानी के लिये नल, गंदे पानी के लिये नालियों व पाखाने की व्यवस्था हो सकती है?

क्या हर घर में पानी का नल हो सकता है?

गंदी नालियाँ खुली नहीं होनी चाहिये

सरकार को हमारी आवाज़ सुननी पड़ेगी.

भैयाटूट्टी के लिये बहुत तकलीफ है दूर जाना पड़ता है.

नहीं भटकना पड़ेगा और पैसा भी बचेगा।

## 8.5 भोजन या टॉनिक

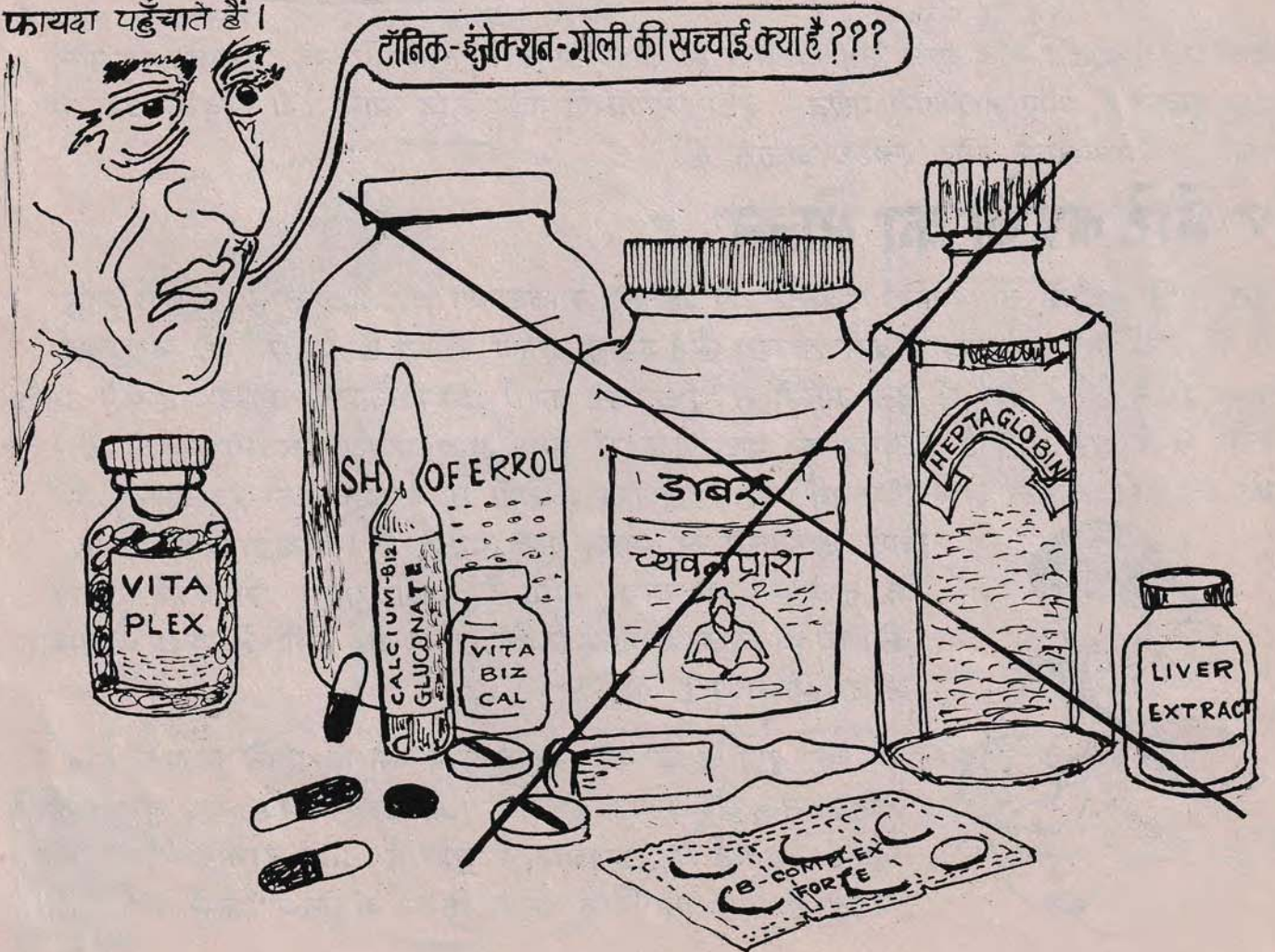
दुनिया में ऐसी कोई टॉनिक की शीशी नहीं है जो शरीर को असल में ताकत देती है। ताकत असल में आती है तो पर्याप्त भोजन, पर्याप्त व्यायाम और आराम, छूत की बीमारियों से मुक्ति और साफ आबोहवा से। इनके अलावा मौँ-बाप का प्यार और ध्यान बच्चे को ताकतवर बनाने में मदद करते हैं।

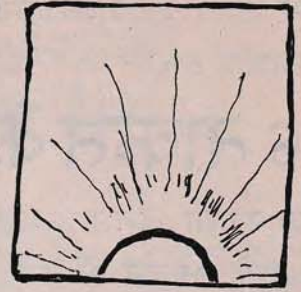
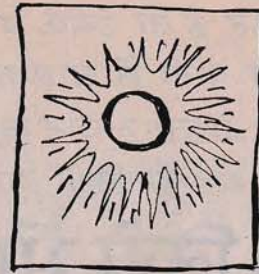
बाजार में मंहगे बिकने वाले टॉनिकों की बहुत सीमित भूमिका होती है। इनमें मुख्य तौर पर दो प्रकार की चीजें होती हैं। एक तो विटामिन (जैसे विटामिन ए, बी, सी, आदि) और दूसरे लवण। शरीर को बढ़ने और काम करने के लिये इन चीजों की जरूरत बहुत थोड़ी मात्रा में होती है। ये विटामिन या लवण हमारे भोजन में आमतौर पर मौजूद होना चाहिये। जब हमें काफी या सही खाना नहीं मिलता तो हमें विटामिन और लवण भी कम मिलते हैं। ऐसी स्थिति में कई समस्याएँ पैदा हो सकती हैं, जैसे मुँह में छाले, चेहरे पर सफेद धब्बे, रतौंध (रात में दिरवाई न देना) भ्रूव न लगना आदि। ये समस्याएँ पैदा होने पर विटामिन या लवण की गोलियाँ ही जा सकती हैं। ये बहुत सस्ती होती हैं। परन्तु गोलियों के साथ-साथ खाने को बेहतर करना जरूरी है। क्योंकि पर्याप्त संतुलित भोजन की कमी ही तो सारी समस्या का जड़ है। यदि बच्चे को

गोलियाँ निगलने में दिक्कत है तो उसके बदले मीठा सिरपन खरीदें। आप खुद गोली को पीसकर शक्कर या गुड़ के साथ पानी में घोलकर बच्चे को दे सकते हैं। इससे काफी पैसा बचेगा जिससे आप बच्चे के लिये बेहतर भोजन का इंतजाम कर सकते हैं। सरकारी स्वास्थ्य कार्यकर्ता से कमजोर बच्चों के लिये यह गोलियाँ मुफ्त भी मिल सकती हैं।

## 8.6 ताकत के लिये भोजन

अच्छा खाना बहुत मंहगा हो यह जरूरी नहीं है। बच्चे के लिये जरूरी सारी चीजें सामान्य शाकाहारी भोजन में भी मिल जाती हैं। परन्तु याद रखिये कि अलग-अलग प्रकार की चीजों से मिलकर बना भोजन जरूरी है। बच्चे का काम केवल चावल या रोटी से नहीं चलेगा। कई चीजों को मिलाकर देना पड़ेगा। एक अनाज (गेहूँ, चावल, ज्वार आदि) किसी एक दाल के साथ (अरहर, चना आदि) जो अनाज का एक तिहाई हो और कोई एक मौसमी सब्जी या फल जैसे, अमरुद, केला या पपीता आदि। सब्जी दाल या रोटी के साथ थोड़ा-सा तेल मिलाने से बच्चे को बहुत फायदा होता है। अंकुरित दालें, जैसे भिगोये हुये चने या मूंग बहुत पौष्टिक होते हैं। डूरी, पीली या लाल सब्जियों में विटामिन होते हैं जो लोगों को फायदा पहुँचाते हैं।





अनाज

एक आदमी का एक दिन  
का खाना कम से कम  
इतना हो.



फायदा पहुँचाते हैं। यदि कुछ अधिक पैसे हों तो माँसाहारी लोग अण्डे, मछली या माँस खरीद सकते हैं और शाकाहारी परिवार दूध, मूँगफली और गुड़ आदि। ये बढ़ती उम्र के बच्चों को ताकतवर और स्वस्थ बनाते हैं।

## ४.७ छोटे बच्चों का भोजन

बहुत छोटे बच्चों को खाना खिलाने में काफी सावधानी की जरूरत है। पहले छह महीनों तक माँ का दूध सबसे अच्छा है। इसके लिये जरूरी है कि माँ को संतुलित भोजन मिले। कई गैस पीड़ित माँओं ने दूध की कमी की शिकायत की है। इससे उनके बच्चे भूखे रह जाते हैं। ऊपर का दूध देने में कुछ सावधानियाँ रखनी पड़ती हैं। ऊपर का दूध बोतल से न पिलायें। इसके बजाय कटोरी व चम्मच का इस्तेमाल करें

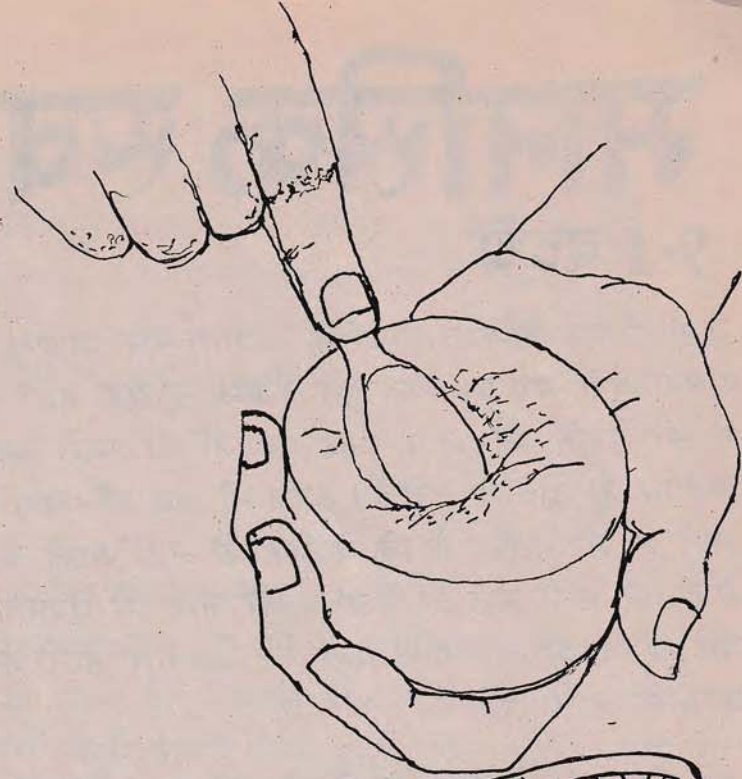


जिसे आसानी से साफ कर सकते हैं। शुरुआत में ऊपर के दूध को जो गाढ़ा होता है, आधा पानी मिलाकर पतला कीजिये व थोड़ी शक्कर डालें ताकि यह माँ के दूध के समान मीठा हो जाये।

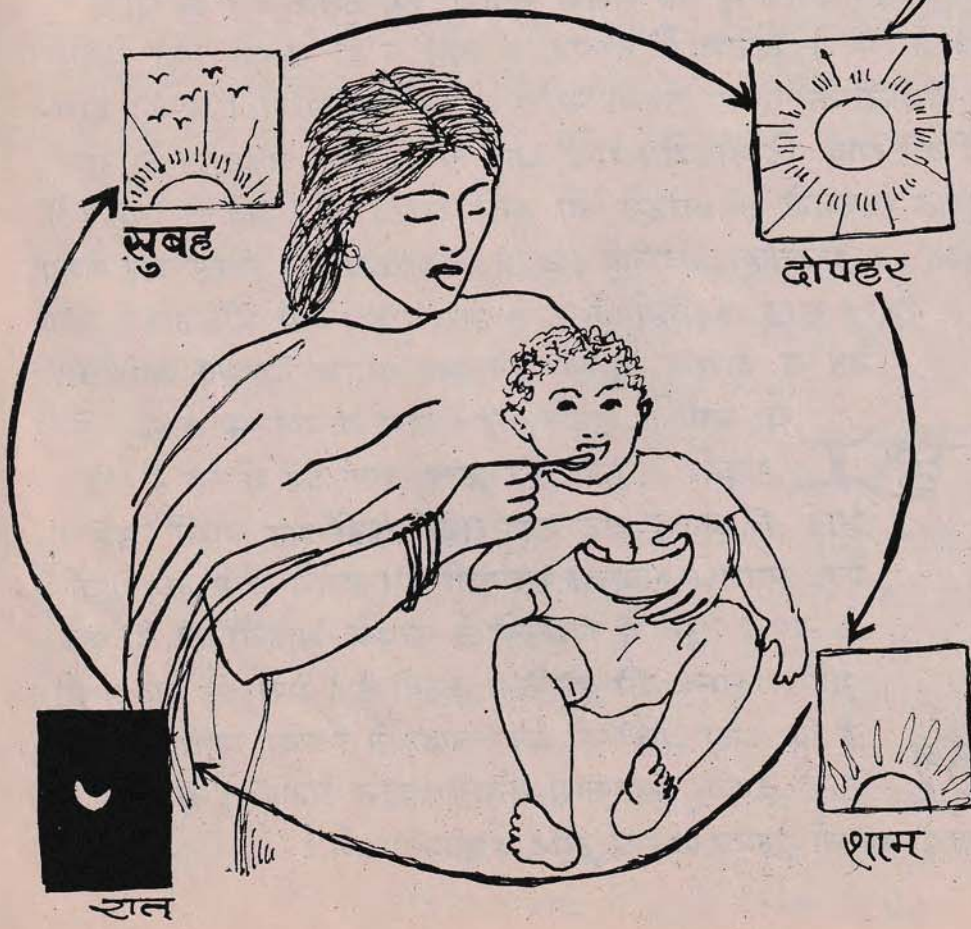
माँ का दूध बच्चे को स्वस्थ रखने के लिये पहले छह महीने तक ही काफी होता है। जो बच्चे इसके बाद दूसरा खाना नहीं खाते हैं वे कमजोर हो जाते हैं और बीमार भी ज्यादा पड़ते हैं। बड़ों को सिर्फ काम करने के लिये खाने की जरूरत

होती हैं जबकि बच्चों को बढ़ने के लिये भी भोजन की जरूरत होती है। इसलिये उनकी भोजन की जरूरत दुगुनी होती है। वैज्ञानिकों ने पता लगाया है कि दो वर्ष के स्वस्थ बच्चे को उसकी माँ जो खाती है, उसके उद्गुना भोजन की जरूरत है। इतना खाने के लिये बच्चे को कम से कम चार बार खिलाना पड़ेगा।

इसलिये बच्चे को छह महीने की उम्र से ही कुछ खिलाना शुरू करें। यदि किसी कारण से दूध काफी नहीं है तो चार महीने से शुरू कर दें। शुरूआत नरम और आसानी से पचने वाले भोजन से करें। छोटे बच्चों को कब और क्या खिलाना चाहिये यह जानकारी अपने इलाके में काम करने वाले डॉक्टर या स्वास्थ्य कार्यकर्ता से लें।



चार महीने से नरम खाना खाने की आदत बन गई है।



बच्चों को स्वस्थ रखने और कई बीमारियों से बचाने वाले तीन महत्वपूर्ण अंगरक्षक हैं :

- पोषक आहार
- स्वच्छता
- टीके (प्रतिरक्षक)

# मानसिक स्वास्थ्य

## 9.1 बच्चे



गैस रिस्न ने सभी लोगों के दिमाग पर गहरा असर किया है। पर बच्चे सबसे बुरी तरह प्रभावित हुये क्योंकि वे यह नहीं समझ पाये कि क्या हुआ जिसने उनके माँ-बाप, भाई-बहनों को उनसे अलग-अलग कर दिया। कुछ बच्चे तो अपने परिवार में अकेले बचे हैं। आज भी जब माँ-बाप अपने बच्चों को 'जन स्वास्थ्य केन्द्र' में लाते हैं तो बताते हैं कि वे ठीक से नहीं खाते हैं। रात में बच्चे घबराये से सोते हैं, बीच-बीच में डरकर जाग जाते हैं। कुछ बच्चे नींद में पेशाब कर देते हैं। इन बच्चों को स्कूल में बातें याद रखने और ध्यान देने में दिक्कत होती है। कुछ बच्चे जो काम करले थे, अब काम पर नहीं जा पा रहे हैं।

इन दिक्कतों के लिए बच्चों को डाँटे या मारें नहीं। मार से ये दिक्कतें शायद और गहरी हो जायें। डाँटने-मारने से फायदा नहीं उल्टा नुकसान है। आपको बच्चे का मन जीतना चाहिये ताकि अपने अन्दर के डर के बारे में वह सब कुछ बता दे। इस तरह आप बच्चे के दिमाग से डर को बाहर निकालने में सफल हो सकेंगे। इससे वे यह समझ सकेंगे कि उनके डर के पीछे उस समय हुई घटनायें हैं। अब न तो ये घटनायें हो रही हैं और न ही इनके फिर से होने की संभावना है। बच्चे में हौसला बढ़ाने के लिए उसके साथ वक्त गुजारिये। उसकी क्षमताओं व पहले की कामयाबियों की याद दिलाइये। यदि आप थोड़ा पैसा बचा सकें और समय हो तो बच्चों को ऐसी जगह दिखाने ले जाइये जो उन्हें पसंद हो। यदि वे स्कूल में हैं तो उन्हें उनकी पढ़ाई में मदद व प्रोत्साहन दीजिये। कुछ लड़कियों के लिए यह समय लड़कों की बनिस्वत ज्यादा बुरा रहा। कुछ लड़कियों के भाई मर गए। ऐसे माँ-बाप के लिए

यह न केवल दुःख की बात थी बल्कि एक सामाजिक

व आर्थिक टूटन भी। इस कारण से कुछ नई

अपनी लड़की को इस बात पर कोसा है कि

भाई की जगह वह खुद क्यों नहीं मर गयी। इससे

एक अपराध भावना पनपती है। हमने कई लड़कियों

के सपने सुने हैं जिसमें वे अपने भाइयों को ढूँढकर

वापिस लाने की कोशिश करती हैं। ऐसे में यह जरूरी

है कि आप बच्चियों को ज्यादा से ज्यादा प्यार करें व

उन्हें इसका अहसास कराये। गैस प्रभावित बस्तियों में

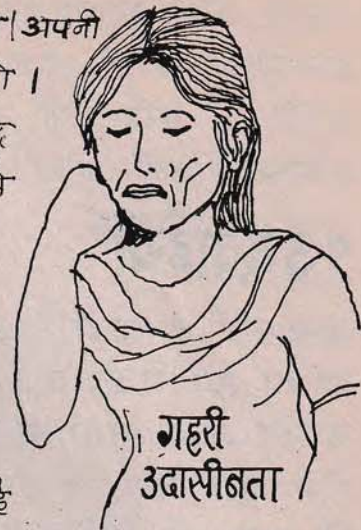
ऐसी व्यवस्था करायी जानी चाहिये। जिससे ये लड़कियाँ रोजगार पा सकें, और बीझ न बनें।



बच्चियों से प्यार करने की यह सलाह शायद आपके लिए मुश्किल हो। अपनी रोजमर्रा की जरूरतें पूरी करने में ही शायद बहुत मेहनत करनी पड़ती हो। शायद आप स्वयं भी उतनी अच्छी दिमागी हालत में न हों। इसके बावजूद हम कहेंगे कि आप कुछ करें। क्योंकि इस मामले में आपके सिवा बच्चे की मदद कोई और नहीं कर सकता। यदि मदद की जरूरत हो तो आप ऐसा स्वास्थ्य कार्यकर्ता या डॉक्टर ढूँढें जिसकी सहायुभूति और सलाह पर आपको भरोसा हो।

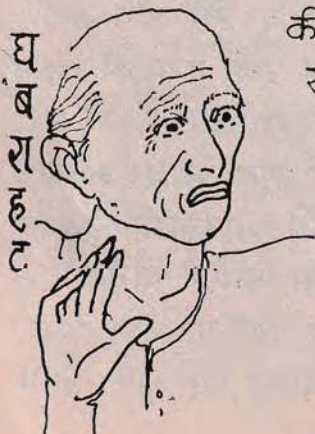
## १.२ बड़े

शायद ग़ैस दुर्घटना का आपके दिमाग पर इतना गहरा असर हुआ है कि आप रोजमर्रा के जीवन को मुश्किल से संभाल पा रहे हैं। या आपके घर में किसी को या किसी दोस्त को मानसिक बीमारी हो गयी हो, जिसमें डॉक्टरी इलाज की जरूरत पड़ी हो। यह बीमारी एक भयानक यातना बन गयी होगी, और कई लोग इसी कारण से काम पर न लौट सके हों। कुछ लोगों की पहले से चली आ रही मानसिक बीमारी और बिगड़ गयी होगी। ऐसे सभी लोगों को सहायुभूति व उचित देखभाल की जरूरत है।



ग़ैस रिसन के कारण दो प्रमुख मानसिक परेशानियाँ पैदा हुयी हैं, गहरी उदासीनता और घबराहट। उनींदापन, कमजोरी, दुःख, भूख न लगना, यौन इच्छा न होना आदि गहरी उदासीनता के लक्षण हैं। छाती में कसाव, धड़कन बढ़ना, छोटी-छोटी सौंसे, ज्यादा पसीना, उचटी हुई नींद या भयानक सपने आना, याददाश्त की कमजोरी, शरीर में तनाव व दर्द आदि घबराहट के लक्षण हैं।

गहरी उदासीनता व घबराहट आमतौर पर साथ-साथ होते हैं। दिन भर इनमें उतार-चढ़ाव भी आते रहते हैं। एक तरह की अपराध भावना व स्वयं तथा औरों के प्रति नकारात्मक विचार गहरी उदासीनता की आम बातें हैं। घबराहट के कारण अत्यधिक डर व आतंक का भाव पैदा होता है। जिन लोगों को ऐसा नहीं होता उन्हें ये भावनाएँ अवास्तविक लगती हैं और अक्सर वे इन्हें फितूर कहकर टालने की कोशिश करते हैं। सच यह है कि इन लोगों



की भावनाएँ हमसे कहीं ज्यादा तीव्र होती हैं। ऐसे व्यक्ति आत्महत्या तक कर सकते हैं। हमें ऐसी भावनाओं को नकारना नहीं चाहिये बल्कि उस व्यक्ति के साथ बैठकर, बतियाकर व आदर से उसकी बात सुनकर उसकी भावनाओं के बोझ को हल्का करने में मदद देनी चाहिये। इससे व्यक्ति के जीवन में काफी बदलाव आयेगा और वह अपना खोया आत्मविश्वास, वास्तविकता का अहसास और आत्मसम्मान सब पा लेगा। आत्मसम्मान के लिए यह भी जरूरी है कि व्यक्ति को यह महसूस हो कि वह उपयोगी है। वह कुछ कमा सके तो बहुत ही अच्छा है।

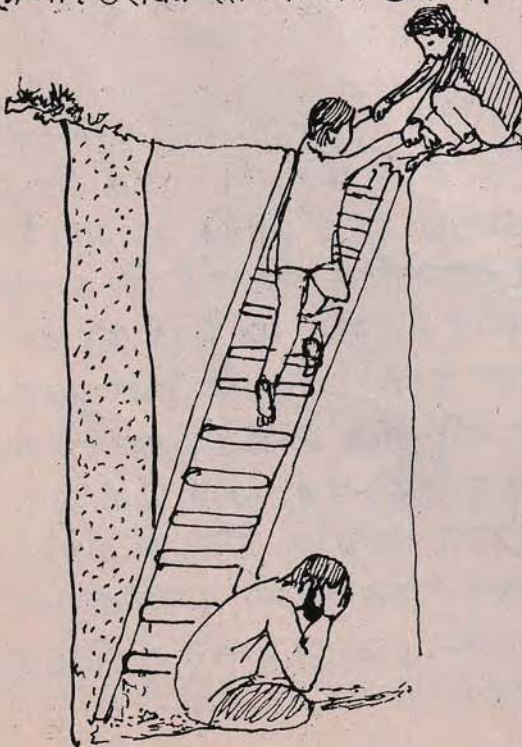
जिन्हें ऊपर बताया गई तकलीफें हैं उनसे हमारा कहना है कि ये तकलीफें जीवन के लिए खतरनाक नहीं हैं, चाहे आज वे परेशानी का कारण हों। जैसे दिल की धड़कन बढ़ने से घबराये नहीं। सारी परेशानियाँ डाक्टर या भरोसेमंद व्यक्ति से कहें। डॉक्टर, रिश्तेदार सबको आपकी समस्या सुननी चाहिए। शायद वे इससे उबरने का कोई रास्ता बता सकें।

## 9.3 दवाईयाँ

कुछ ऐसी दवाईयाँ हैं जो इस हालत से उबरने में मदद कर सकती हैं। ये डॉक्टर द्वारा दी जा सकती हैं। कई बार ये दवाईयाँ तकलीफ को बहुत हद तक कम कर देती हैं और हालत जल्दी सामान्य होने लगती है। किसी मानसिक संकट से निकलने के लिए यदि कुछ दिन दवा लेना पड़े तो इसमें हार महसूस करने की कोई बात नहीं है। यदि आपको लगता है कि जीने का कोई मतलब नहीं है और आत्महत्या करने या दूसरों पर हमला करने की इच्छा होती है तो तुरंत डॉक्टर से सलाह लीजिये। डॉक्टर दवाईयाँ देंगे व दवाई की खुराक पर निगरानी रखेंगे। किसी भी हालत में डॉक्टर की राय से ज्यादा दवाईयाँ न खाये। आखिर में आपको अपने पैरों पर ही खड़े होना है, दवाईयों की बैसाखियों पर नहीं। मानसिक बीमारी में दवाईयों से ज्यादा जरूरत दोस्तों और रिश्तेदारों के सहयोग की होती है। स्वास्थ्य कार्यकर्ता भी मदद कर सकते हैं।

## 9.4 दोस्त और रिश्तेदार

दोस्तों, रिश्तेदारों और स्वास्थ्य कार्यकर्ता को घीरज के साथ रोगी के साथ समय बिताना होगा। उसकी रुचियों को उजागर करना होगा। उसे ऐसी बातों, गतिविधियों या हुनर से जोड़ना होगा जो उसकी रुचि के रहे हैं। धीरे-धीरे उसकी पुरानी सफलताओं की याद दिलानी होगी। उसकी नयी पहलकदमियों को सराहें व प्रोत्साहन दें। ऐसा भी हो सकता है कि मानसिक परेशानी भुगतने वाले कुछ लोग एक साथ स्वास्थ्य कार्यकर्ता से मिलें और चर्चा करें। क्यों उन्हें हर काम करने में इतनी मुश्किल होती है, सब कुछ इतना उरावना क्यों लगता है? आदि बातों पर बातचीत हो सकती है। वे यह भी सोच सकेंगे कि वे एक दूसरे की मदद कैसे करें या एक दूसरे को सामान्य जिंदगी की समस्याओं से जूझने की तरकीब बतायें। कई बार सामान्य लोगों से ज्यादा बीमार लोग खुद ज्यादा मदद दे पाते हैं क्योंकि वे एक दूसरे की अंदरूनी भावनाओं को ज्यादा बेहतर तरीके से समझते हैं। परन्तु इस चर्चा के दौरान एक अनुभवी व परिपक्व मानसिक स्वास्थ्य कार्यकर्ता का होना जरूरी होगा (जो स्वयं कभी इस ढंग से बीमार पड़ चुका हो)।



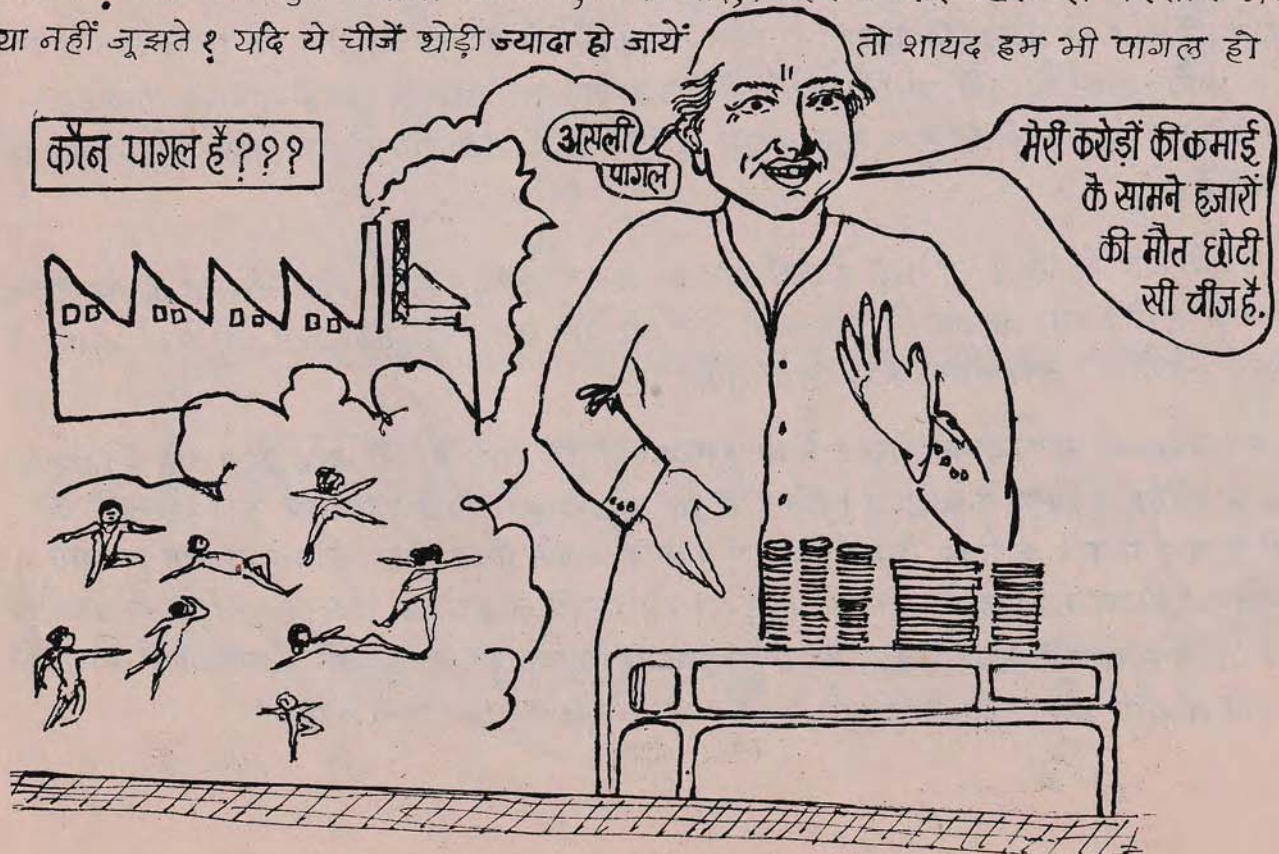
इससे स्थायी मानसिक स्वास्थ्य समूह बन सकेगा। जिससे मानसिक संकट के समय लोगों को मदद मिल सकेगी। मानसिक रूप से विचलित व्यक्ति भी हमारे आदर के हकदार हैं। कभी मत भूलिये कि वे भी इंसान हैं। ठीक होने के लिए उन्हें प्यार की जरूरत है।

## 9-5 असली पागल कौन है?

अक्सर लोग अपने आसपास के अन्याय और निर्दयता से तालमेल न बेटा पाने के कारण मानसिक परेशानियों में लगे होते हैं, या वे किसी भयानक और दर्दनाक अनुभव को भुला नहीं पाते, जैसे - बलात्कार जिसमें उनको ताकत से दबा दिया जाता है और उनकी जिंदगी का संतुलन अस्त-व्यस्त कर दिया जाता है। या उन्हें ऐसी स्थितियों में जीने को मजबूर किया जाता है जिसमें उनकी जरूरतों और इच्छाओं का दमन मानवीय सहज शक्ति की सीमा से बाहर हो जाता है। या हो सकता है कि पारिवारिक जिम्मेदारियों का बोझ उनकी ताकत के बाहर हो जाता है और काफी काम करने के बावजूद या काम न मिलने के कारण काफी पैसा भी नहीं पाते हों।

ऐसे लोगों को पागल कहा जाता है। या कहा जाता है कि वे बीमार हैं और उन्हें इलाज के लिए डॉक्टर के पास ले जाया जाता है या कई बार कहा जाता है कि उन पर भूत लग गया है और झाड़फूंक करवायी जाती है।

परंतु ऐसा कहते हुए हम अपने समाज की उन गलत बातों को भूल जाते हैं जिनके कारण ये लोग टूटन की स्थिति में पहुँचे हैं। क्या हमें खुद समाज में हो रहे शोषण की जानकारी नहीं है? क्या हम खुद रोजाना अन्याय, भ्रष्टाचार, निर्दयता और हिंसा से परेशान नहीं होते या नहीं जूझते? यदि ये चीजें थोड़ी ज्यादा हो जायें तो शायद हम भी पागल हो जायेंगे।





और क्या हममें से कई को इस बात का डर नहीं? परन्तु क्या हमारे अन्दर कुछ गड़बड़ है?

जिस तरीके से हमें जीने को मजबूर किया जाता है, जिस समाज में जीने के लिए जरूरी है कि घुटने टेक दें या ब्रेईमान हो जायें, भ्रष्ट हो जायें या हिंसक हो जायें, क्या यह सब ठीक है? जहाँ यूनियन कार्बाइड हजारों लोगों को कीड़े मकोड़ों की तरह मारकर भी भुजरिम नहीं, सजायाफ्ता नहीं, क्या उस समाज में गड़बड़ नहीं है?

यदि इस सब के बारे में सोचें तो क्या आपको अब भी लगता है कि दूटे हुए लोग समस्या की जड़ हैं? या बीमारी समाज में है? और वास्तव में पागल तो वे हैं जो पैसा बनाने में मशगूल हैं, जो पैसा बनाने के लिए बेकसूर लोगों की जान लेने से भी नहीं चूकते?

जब आप इस प्रकार से समस्या को देखते हैं तो हम कहेंगे कि आप हमारी तरह सोच रहे हैं। और अब अगर आप मानसिक स्वास्थ्य के बारे में चिंतित हैं तो आइये हम सब मिलकर इस बीमारी को समाज से उखाड़ फेंकने के लिए तैयार हो जायें! ताकि सबके लिए सुंदर जीवन बनाया जा सके। एक जुट होकर यूनियन कार्बाइड के खिलाफ लड़िये। उन सभी ताकतों के खिलाफ लड़िये जो कार्बाइड की मदद करती हैं और उसे बचाती हैं। उन सभी ताकतों के खिलाफ लड़िये जो इंसान की जान की इज्जत नहीं करतीं और आपको दबाती हैं। हार मानने से काम नहीं चलेगा।

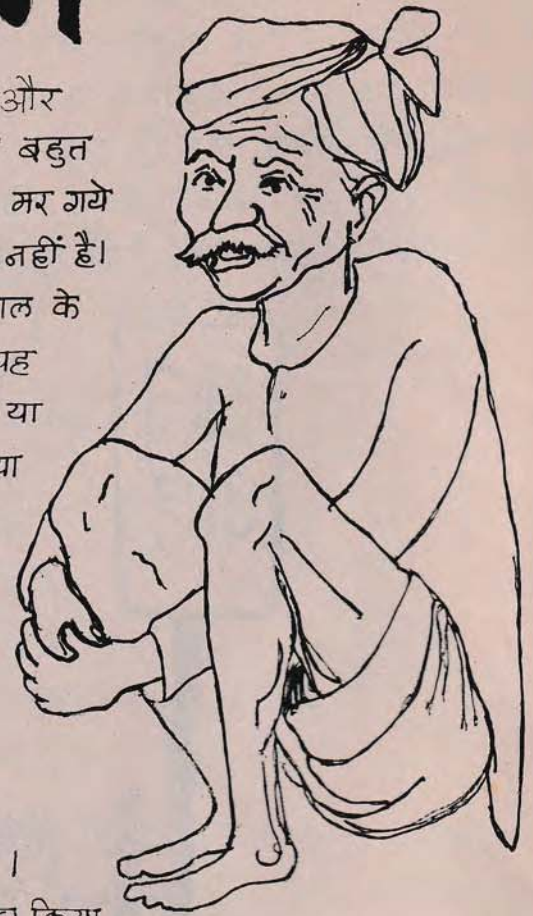
## 9.6 मुआवजा

मुआवजे और गैस रिसन से मानसिक स्वास्थ्य पर असर को लेकर हम कुछ कहना चाहेंगे। अमेरिका में ऐसे मामले लोगों ने सामूहिक रूप से अदालत में उठाये हैं। इन मामलों से यह साबित हुआ है कि किसी दुर्घटना का मानसिक असर भी उतना ही नुकसान देह है जितना शारीरिक असर। वहाँ की अदालतों ने इस तरह की दुर्घटना से प्रभावित लोगों की मानसिक वेदना, उनकी जिंदगी और इंसानी रिश्तों में उथल पुथल के लिये भरपूर मुआवजे दिलवाये हैं। इन दुर्घटनाओं के लिये जिम्मेदार कंपनियों को प्रभावित लोगों को ये मुआवजे देने पड़े हैं।



# बूढ़े लोगों के बारे में

अन्य अल्पसंख्यकों की तरह बूढ़े लोग भी हमेशा लापरवाही और अपेक्षा के शिकार रहते हैं। बच्चों की तरह बूढ़ों की भी गैस ने बहुत ज्यादा नुकसान पहुँचाया है। और प्रभावितों में से अधिकांश मर गये हैं। जो बच गए हैं, स्वास्थ्य की दृष्टि से उनकी स्थिति ठीक नहीं है। लेकिन लोगों के पास उनकी ओर ध्यान देने और सही देखभाल के लिये (जिसकी जरूरत है) बहुत कम समय या ताकत है। लोग यह अहसास करने के लिये ही तैयार नहीं हैं कि बूढ़े लोग अपेक्षा या लापरवाही के शिकार हैं। लोग हमेशा बूढ़ों को भूले रहते हैं या भूले रहना चाहते हैं क्योंकि वे परिवार के कमाऊ सदस्य नहीं होते हैं।



बूढ़े लोगों को विशेष देखभाल और प्यार की जरूरत होती है। यह सच है कि वे अब परिवार को आर्थिक या और किसी तरह की मदद नहीं कर सकते हैं, लेकिन उन्होंने अपने जीवन में समाज और परिवार के लिये बहुत कुछ किया है। त्याग और कड़ी मेहनत से वे हमें बड़ा करते हैं। उन्होंने अपने से पहले की और हमारी पीढ़ी के लिये बहुत कुछ किया है। हमारी संस्कृति को बनाये रखने में उनका बड़ा योगदान है।

यदि हम उनकी उचित देखभाल करेंगे तो वे हमें बहुत कुछ मदद कर सकेंगे। यह बहुत आसान है कि हम उन्हें भुला दें और किसी चीज के लिए उनका अहसान न मानें। अधिकतर बूढ़े लोग कोने में अकेले पड़े मौत का इंतजार करते रहते हैं। उन्हें इस तरह न छोड़ें। उनकी ठीक से देख-

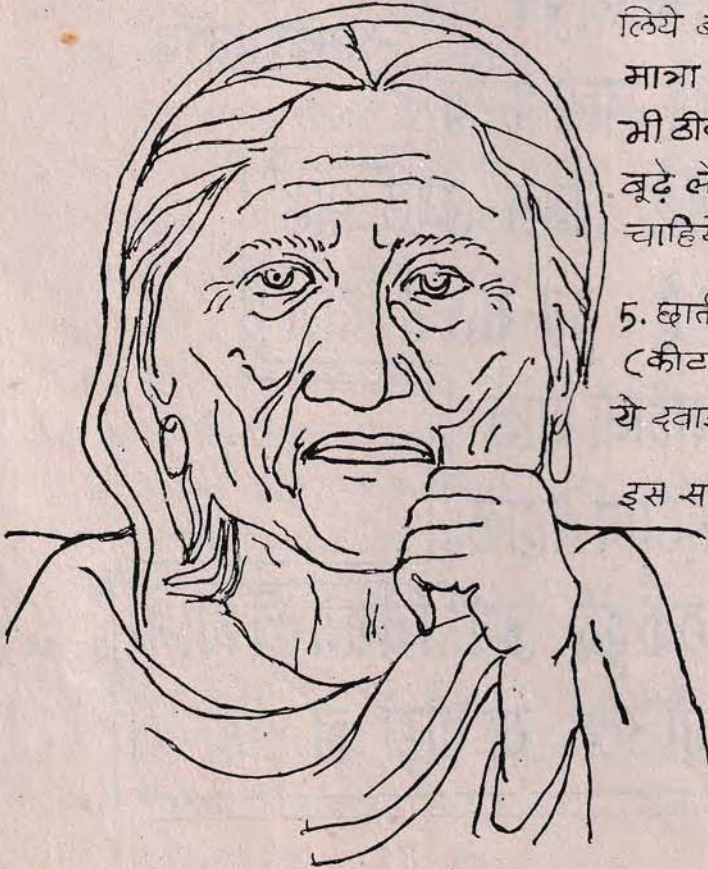


भाल की कोशिश करें। बूढ़े लोगों की कुछ खास शिकायतें होती हैं। शरीर ठीक से काम नहीं कर पाता है। हमेशा तकलीफ और दर्द होता रहता है। अक्सर छाती में धूत की बीमारी होती है। गैस की वजह से यह आसानी से निमोनिया में बदल सकती है। कब्ज भी आसानी से हो जाती है क्योंकि पेट की आंतें ठीक से काम नहीं कर पाती। यदि उन्हें दर्द लग जायें तो बूढ़ी सूखी देह से शरीर का सारा पानी निकल जाता है। हड्डियाँ कड़ी हो जाती हैं और गिरने या फिसलने पर तुरंत टूट जाती हैं। बूढ़े लोगों की आँखें वैसे ही कमजोर होती हैं, गैस ने उन्हें और

भी धुंधला बना दिया है। चूँकि अधिकतर बूढ़े लोगों के दांत नहीं होते हैं इसलिये वे आवश्यक मात्रा में भोजन खा या चबा नहीं सकते और न ही अपनी जरूरत के हिसाब से भोजन पका सकते हैं। यही नहीं वे यह भी महसूस करते हैं कि वे अपने लिये कोई खास भोजन की माँग नहीं कर सकते हैं। इसलिये वे हमेशा कुपोषण से पीड़ित रहते हैं। बूढ़े लोगों के दिमाग कभी-कभी कमजोर हो जाते हैं, खासकर बीमारी के समय। ऐसे समय वे बड़ी मुसीबत में फँस जाते हैं और कमजोर महसूस करते हैं। यदि इन सब बातों की ओर ध्यान देकर बूढ़ों के लिये थोड़ा समय निकाला जाये तो उनका स्वास्थ्य सुधर सकता है और साधारण बीमारी को भी वे किस्मत की बात कहकर टालने से बच सकेंगे।

स्वास्थ्य कार्यकर्ता के रूप में हम, लोगों को बुढ़ापे में ठीक ढंग से जिन्दगी विताने में मदद कर सकते हैं। बुढ़ापा ज़िंदा मौत नहीं है। कुछ साधारण बातों को ध्यान रखकर परिवार और पड़ोस के बूढ़ों को स्वस्थ व खुश रखा जा सकता है।

1. बूढ़े लोगों से मुलाकात होने पर इज्जत और लगाव के साथ हाल-चाल पूछें।
2. उनके दर्द और तकलीफों के बारे में पूछिये। जाँच व दवाइयों के बारे में आवश्यक सलाह दीजिये। प्रोत्साहित करिये कि वे शहत शिविरों के डॉक्टर या स्वास्थ्य कार्यकर्ता से मिलें।
3. ध्यान रखें कि सर्दियों में उन्हें आवश्यक गर्मी मिल पा रही है या नहीं। धूप में या आग के पास वे रोज बैठ सकें, इसकी व्यवस्था करें।
4. जिनके दांत नहीं हैं, उनके लिये पर्याप्त मात्रा में पौष्टिक भोजन जुटाइये। भोजन मुलायम और आसानी से पचने वाला होना चाहिये। ऐसा भोजन बनाया जाये जैसा एकदम छोटे बच्चों के



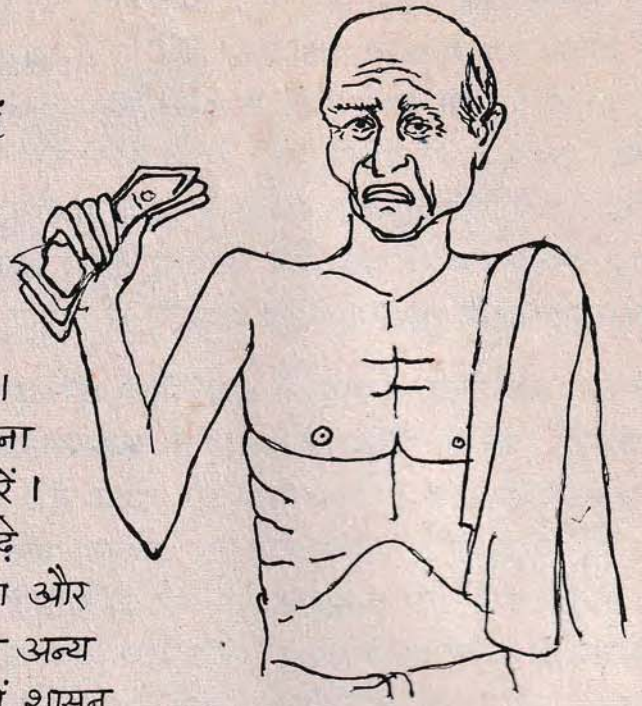
लिये बनाया जाता है। पकी हुई हरी सब्जियाँ भरपूर मात्रा में दें जो ताकत भी देंगी और आँतों की सफाई भी ठीक से करेंगी। इससे वे कब्जित से भी बच सकेंगे। बूढ़े लोगों को काफी मात्रा में पानी व अन्य चीजें पीना चाहिये, खासकर जब दस्त लग रहे हों।

5. छाती की छूत की बीमारियों के लिये एंटीबायोटिक (कीटाणुनाशक) दवाइयों की निश्चित मात्रा देनी होगी। ये दवाइयाँ शासकीय चिकित्सा केन्द्र से मुफ्त मिलती हैं।

इस सबके अलावा हमेशा कोशिश करिये कि बूढ़े लोगों को लगे कि परिवार व समाज को उनकी आवश्यकता है। यदि आप ऐसा करेंगे तो वे भी बच्चों को बड़ा करने में आपकी मदद करेंगे और यह सभी के लिये अच्छा होगा।

# बूढ़ों के लिये पेंशन

जिनका कोई करीबी रिश्तेदार नहीं है या जिन्हें रिश्तेदार सहारा नहीं देते, उन बूढ़े लोगों के लिये शासन की पेंशन योजना है। जैसे प्रभावित क्षेत्रों में इस योजना को विस्तार दिया गया है व वहाँ सभी बूढ़े व्यक्तियों को पेंशन मिल सकती है। साथ ही उन्हें पौष्टिक आहार भी उपलब्ध हो सकता है। स्वास्थ्य केन्द्रों के काम का एक भाग यह भी होना चाहिये कि वह बूढ़े लोगों की पूरी देखभाल करें। इससे हर परिवार का बोझ कम होगा और बूढ़े लोगों को न्यूनतम स्तर की चिकित्सीय सुविधा और पौष्टिक आहार मिल सकेगा। इस समस्या को अन्य किसी तरीके से नहीं सुलझाया जा सकता। हमें शासन पर दबाव डालना चाहिये कि स्वास्थ्य केन्द्रों में ये सुविधायें मिलें।



जली हुई बीड़ी बुझी खाली-खाली जेब  
अटधा खासा आदमी सौ-सौ खाये फरेब

-अरविंद चतुर्वेद

बस्ती-बस्ती धुआँ है जंगल-जंगल आग  
दिल्ली में दरबार है हरा-भरा है बाग

बिन बरसे बादल गये गये महीनों साल  
देश तरक्की कर गया अभी आप बेहाल

खाँसीकी ठक-ठक हुई जगी चिलम की आग  
दिल से एक धुआँ उठा या पीड़ा का राग

# दवाईयाँ: कुछ सलाह

इस पुस्तक में हमने कुछ बीमारियों के साथ उनसे जुड़ी दवाईयों की बात भी की है। मगर दवाईयों को इस्तेमाल करते समय कुछ आम नियमों का ध्यान रखें।



1. दवा की सही खुराक, सही समय पर लें।

आवश्यकता से ज्यादा दवा लेने पर नुकसान हो सकता है।  
बतायी गई खुराक से कम दवा लेने पर असर कम हो सकता है।

2. कुछ दवायें पूरी खुराक से कम न लें।

जैसे एंटीबायोटिक (कीटाणु विरोधी) दवा बीमारी के लक्षण खत्म हो जाने के बाद भी नुस्खे के अनुसार पूरी खुराक में लेते रहें।

3. इन्जेक्शन से बचें।

जब तक कि बहुत जरूरी न हो इन्जेक्शन न लें (जैसे टी.बी. के लिए स्ट्रेप्टोमायसिन या दमा के दौर में ब्रान्कोडायलेटर्स)। तिहरा टीका व खसरा का टीका केवल इन्जेक्शन के रूप में ही दिया जाता है।

4. मंहगी दवाओं से बचें।

शीशी, केप्सूल या डिब्बे में मिलने वाली दवाओं के लिये अधिक पैसा खर्च करना पड़ता है। ज्यादातर दवायें सस्ते दामों पर मिल सकती हैं। ये भी मंहगी दवाओं की तरह असरकारक होती हैं। दवा कंपनियाँ लोगों को उल्लू बनाने और पैसा कमाने के लिए ऐसे तरीके सोचती हैं।

5. नकली दवाओं से सावधान।

उन्हीं लोगों या दुकानों से दवा लें जिन पर आपको भरोसा हो। कुछ दवायें एक निश्चित समय के बाद इस्तेमाल नहीं की जा सकतीं। दवाओं के पैकेट या लेबल पर उनके बनाने की तारीख और वह तारीख जिसके बाद उसे इस्तेमाल नहीं करना है, छपी रहती है। दवा खरीदते समय देख लें कि उसकी इस्तेमाल करने की तारीख निकल तो नहीं गयी।

6. सभी दवाओं को बच्चों की पहुँच से दूर रखें।

7. स्टीरायड नामक दवा से बचें।

स्टीरायड दवाओं के बारे में अध्याय तीन में (दमे के इलाज के साथ) चर्चा की गई है। ये दवायें अन्य रोगों में भी दी जाती हैं। ये कभी-कभी मरीज की जान बचा लेती हैं। किन्तु कुछ डॉक्टर इन दवाओं का उपयोग अन्य दवाओं के साथ जरूरत न होने पर भी करते हैं। मरीज जल्दी अच्छा हो जाता है, पर स्टीरायड दवा असली रोग को दक देती है। आगे चलकर मरीज की हालत और खराब हो जाती है।

8. गर्भ के दौरान अनावश्यक दवाईयों से बचें।

स्वासकर गर्भ के पहले तीन महिनों में तो यह बहुत जरूरी है। यदि आप गर्भवती हैं तो यह बात डॉक्टर को जरूर बता दें। कई दवायें आपके बच्चे को नुकसान पहुंचा सकती हैं या उसके कारण विकलांग बच्चा पैदा हो सकता है। गर्भवती महिलाओं को जौंच केन्द्र से दी गई आयरन और कैल्सियम की गोलियां बच्चे को नुकसान नहीं पहुंचायेंगी, बल्कि आपको भी बहुत फायदा करेंगी।

9. ज्यादातर दवा लेते वक्त पूरे दिन खूब पानी पियें।

10. कुछ दवाईयों को खाली पेट कभी नहीं लेना चाहिये।

जैसे, खाली पेट **एरुप्रिन** लेने से पेट में छाले हो सकते हैं।

11. केवल दवाईयों पर कभी निर्भर न रहें।

याद रखें कि आपका शरीर मौका मिलने पर खुद ही ठीक हो सकता है। सही खाना और पीने का पानी, आराम, सफाई, ताजी हवा, कुछ व्यायाम और प्यार। अच्छी तरह से ठीक होने के लिये इन सभी चीजों की जरूरत है। हरेक व्यक्ति को इस तरह की सुविधाओं के साथ जीने का हक है।

आमतौर पर यह याद रखें कि ज्यादा दवाईयों लेने से और उन पर ज्यादा खर्च करने से हमेशा ज्यादा राहत नहीं मिलती। दवा कंपनियाँ हर प्रकार के मिक्चर और दवाईयों बनाती हैं जिन्हें डॉक्टरी किताबों में लेने के लिये नहीं कहा गया है। दवा कंपनियाँ इस तरह की फालतू और कभी-कभी नुकसान करने वाली दवाईयों बेचकर आपका शोषण करती हैं। कई डॉक्टर इन मुनाफारवोर कंपनियों को मदद देते हैं। डॉक्टर से मँहगी जादू जैसे असर करने वाली दवाईयों न माँगे। सरल और सस्ती वैज्ञानिक दवाईयाँ माँगें।

लोगों को दवाइयों के बारे में मोटी-मोटी बातें और स्वास्थ्य के बारे में आम नियमों को जानना चाहिये ताकि वे अपने और परिवार के स्वास्थ्य को बचा सकें। डॉक्टर अक्सर ज्यादा प्रसिद्ध होने के लिये, ज्यादा मरीजों को खींचने के लिये और अन्य डॉक्टरों के मुकाबले ज्यादा कमाने के लिये जनता के अज्ञान का फायदा उठाते हैं। डॉक्टर यह भी कहते हैं कि कुछ दवाईयों को जैसे, टॉनिक या इन्जेक्शन देने के लिये वे मजबूर हो जाते हैं क्योंकि मरीज उनकी माँग करते हैं।

अपने डॉक्टर से कहें कि आपको अनावश्यक दवाईयों नहीं चाहिये। डॉक्टर को यह किताब दिखायें। इससे आपको सही इलाज पाने के हक को साबित करने में मदद मिलेगी।

**किसी भी दवा के इस्तेमाल में कोई न कोई खतरा जरूर होता है।**



# अपने सुभाव और विचार — जरूर भेजें —

यह किताब सही जानकारी, सही इलाज और स्वास्थ्य के मामले में अपने हकों को पाने के लिये लड़ाई का पक हिस्सा है। इस तरह यह हम सब लोगों की किताब है।

हम इसे और अच्छी ढंग उपयोगी बनाना चाहते हैं—  
आपकी मदद से।

यदि आप इसे सुधारने के लिये सुभाव देना चाहते हों  
तो जरूर भेजें।

आप हमें यह भी बतायें कि —

किताब के कौन से हिस्से आपको सबसे ज्यादा  
काम के लगते हैं,

और कौन से हिस्से, पृष्ठ, पैरा एवं रेखाचित्र  
उलझाने वाले या खराब लिखे गये हैं,

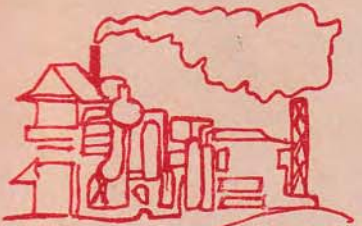
या सबसे कम काम आने वाले तथा गलत  
लगते हैं।

हमें खासकर गैस पीड़ितों और उनके  
बीच काम करने वाले स्वास्थ्य कार्य-  
कर्ताओं, अन्य स्वयं सेवकों के  
सुभाव पाने में खास दिलचस्पी है।

**सुभाव इस पते पर भेजें:**

हमारी सेहत, हमारी लड़ाई  
द्वारा, एकलव्य,  
ई 1/208, अरेरा कालोनी  
भोपाल (म.प्र.) 462 016

# भोपाल गैस हादसा



- ★ पुराने भोपाल में गरीब लोगों की बस्तियों के पास यूनियन कार्बाइड कंपनी का कारखाना था। इसमें सेविन नाम का एक कीटनाशक बनता था। इसे बनाने के लिये एक जहरीली गैस एम. आर्द. सी. (मिक) रखी जाती थी।
- ★ कंपनी का यह फर्ज था कि इस गैस के खतरे के बारे में सरकार को, नगरपालिका को, और भासपास रहने वालों को आगाह करती। और गैस रिसने पर क्या करना चाहिये, इसकी पूरी तैयारी रखना चाहिये थी। यह और भी जरूरी था क्योंकि इसके पहले भी कुछ दुर्घटनायें हो चुकी थीं। लेकिन करोड़ों रुपयों का मुनाफा कमाने वाली कंपनी कुछ चंद रुपयों की बचत के लिये लोगों की जान से खेलने पर उतार, था।
- ★ और हुआ भी यही। दो और तीन दिसंबर, 1984 की काली रात को 12:30 बजे मिक टैंक नं. 610 फट गया और जहरीली गैसों का मिश्रण सफेद बादल के रूप में आसमान में छा गया।
- ★ चंद मिनटों में लोग खाँसते, उल्टी करते, आँखों पर हाथ रखे सड़कों पर अस्पताल की ओर, शहर के बाहर की ओर भागे।
- ★ कुछ ही घंटों में 10,000 से ज्यादा लोग शहर छोड़कर भाग गये और 20,000 से अधिक लोग अस्पताल में पहुंचे तथा 500 से ज्यादा मारे गये। अनगिनत पशु और पक्षी भी मर गये। दूर-दूर तक पेड़ों की पत्तियाँ झड़ कर गिर गईं।
- ★ कुल कितना नुकसान हुआ इसका अंदाज आज तक ठीक से नहीं मिल पाया। सरकारी सूत्रों से पता चलता है कि कम से कम 2500 लोग मारे और करीब ढाई लाख लोग गैस से प्रभावित हुए। लोगों का कहना है कि यह संख्या कम करके बताई गई है।
- ★ यह दुनिया की सबसे बड़ी औद्योगिक दुर्घटना है। ऐसा हादसा पहले कभी नहीं हुआ था। इसलिये इसका मुकाबला कैसे करना है यह किसी को पहले से मालूम नहीं था। आज भी हादसे की और इलाज की पूरी तथा सही जानकारी हमें मालूम नहीं है।